

# योहन्ना

( बाइबिल का भाग )  
प्रभु यीशु का जीवन और संदेश

यीशु ने कहा

जगत की ज्योति मैं हूँ। (अहं जगतो ज्योतिः)

मोक्ष द्वार मैं हूँ। (अहं द्वार स्वरूपः)

पुनरुत्थान और जीवन मैं हूँ। (अहं पुनरुत्थान जीवनञ्च)

मार्ग सत्य और जीवन मैं हूँ। (अहमेव पन्थाः सत्यञ्च जीवञ्च)

(यो. 8:12, 10:9, 11:25, 14:6)

## शिष्य थॉमसन

**SNHV (Shishyashram New Hindi Version by Shishye Thomson)**

### शिष्याश्रम

**SHISHYASHRAM**

[Registered under Indian Trust Act, 1882 Reg.no-2401]

305 D/A Sheeshmahal, Shalimar Bagh, New Delhi-110 088

e-mail: [jawabjawab@yahoo.com](mailto:jawabjawab@yahoo.com)

Please visit: for new messages and Bhakti songs

[www.shishyashram.com](http://www.shishyashram.com)

# सनातन सत्गुरु

शिष्य थॉमसेन

## मनुष्य की वास्तविक समस्या

मनुष्य की समस्या पानी की कमी, गरीबी, बुरी सरकार या बेरोजगारी नहीं है। या फिर शारीरिक बीमारी टी. बी. कैंसर या ऐड्स नहीं है। वास्तविक समस्या एक अदृश्य आत्मिक अवस्था है। यहाँ शरीर, प्राण और आत्मा में जहर फैला हुआ है, जिसे पाप कहते हैं। पाप जीवित और सच्चे परम ईश्वर का विरोध है, उसके सत्य का तिरस्कार है, और उसकी इच्छा का उल्लंघन है। इसके कारण परमेश्वर से अलगाव होता है, और संबंध टूट जाता है।

पाप, परमेश्वर की इच्छा और गुणों के विपरीत का जीवन है और ये मनुष्य में शारीरिक और आत्मिक मृत्यु उत्पन्न करता है।

चारों तरफ़ नज़र घुमा कर देखिये, चोरी, डकैती, हिंसा और हत्या, बलात्कार, धोखा, भ्रष्टाचार, अन्याय और अधर्म फैला हुआ है। बाहर छोड़िये अपने अंदर झाँक कर देखिये, ईर्ष्या, क्रोध, बैर, झगड़ा, विरोध, लालच, वासना, घमंड, और झूठ सब कुछ भरा हुआ है।

अपने जीवन के उद्देश्यों को टटोल कर तो देखिये मालूम पड़ जायेगा की हर काम के पीछे स्वार्थ है। दान देते हैं, पर साथ में नाम कमाना चाहते हैं। गरीबों की मदद करना चाहते हैं, पर अखबार में

नाम लिखवाना चाहते हैं। पड़ोसी को शायद अस्पताल तो ले जाते हैं, पर बदले में कुछ उम्मीद भी रखते हैं।

## कौन भटक गया है?

ईश्वर या हम, जैसे एक बच्चा मेले में खो जाता है, पर सोचता है, कि माता पिता खो गये हैं। पर सच्चाई तो ये है, कि माता-पिता नहीं बच्चा खोया है। इसी तरह ईश्वर नहीं मनुष्य खोया है।

जब तक ये सत्य हम पर प्रगट नहीं होगा, तब तक हम अपने प्रयासों के द्वारा परमेश्वर तक पहुँचने की कोशिश करते रहेंगे, सृष्टिकर्ता ईश्वर को हम सृष्टि की निर्जीव वस्तुओं में ढूँढ़ते रहेंगे।

## सांसारिक गुरु

आज संसार में बहुत से शिक्षक हैं। बहुत गुरु हैं हर जगह धर्म प्रचार और सभायें हैं। किताबें हैं, रेडियो और टी. वी. पर प्रवचन हैं। ज्ञान हर जगह है, पर जीवन नहीं है बोला कुछ जाता है, और किया कुछ जाता है। ईश्वरीय जीवन नहीं है। प्रभु यीशु ने समकालीन धर्मगुरुओं के बारे में कहा कि इनके पीछे चलने से न तो मोक्ष न स्वर्ग और न ही ईश्वर मिलता है, पर हाँ अंत नरक की अग्निज्वाला में अवश्य होता है। नश्वर मानव जब स्वयं अपने को गुरु घोषित करता है, तो अपना ज्ञान बता कर लोगों को बहकाता रहता है। अपने लिये

अनुयाईयों और चेलों का जमा करता है। खुद सिहाँसन पर बैठता है, बड़े-बड़े धर्मस्थल बनाता है। सोना-चाँदी इकट्ठा करता है, और अपने अनुयाईयों से दान दक्षिणा वसूल करता है, और अपनी सेवा कराता है।

### सनातन सत्गुरु

प्रभु यीशु ने कहा यदि कोई प्रधान बनना चाहता है तो सबका सेवक बने, जो बड़ा बनना चाहता है वह सबका नौकर बने। सनातन सत्गुरु प्रभु यीशु कुर्सी से खड़े हुये, उन्होंने नौकर के कपड़े पहने। और पानी लेकर वे शिष्यों के पैरों पास बैठे, और उन्होंने अपने शिष्यों के पाँव धोये। और कहा जाओ ईश्वरीय जीवन का प्रदर्शन करो जैसे मैंने किया है, तुम भी वैसा ही करो।

प्रभु यीशु स्वर्ग से आये और वहाँ की बातें हमें बताई, इसलिये हमे उनकी बातों पर विश्वास करना पड़ेगा।

प्रभु यीशु मोक्षदाता परमेश्वर के अवतार इस धरती पर मानव रूप धारण कर आते हैं, यहाँ आकर वे कहते हैं कि स्वर्ग में कोई खतरनाक ईश्वर नहीं है, कोई खूनी ईश्वर, तलवार भाला या हथियार लेकर नहीं बैठा है, पर स्वर्ग का ईश्वर हमारा पवित्र और प्रेमी पिता है, जो हर मनुष्य से उसी तरह प्रेम करता है, जैसे एक पिता अपने बीमार मरणासन्न बच्चे से प्रेम करता है, पर साथ ही साथ उसकी बीमारी से घृणा करता है, इसी तरह परमेश्वर हम से तो प्रेम करते हैं, पर हमारी पापी अवस्था से घृणा करते हैं, वह हमें बचाना चाहते हैं, हमारी मृत्यु

और बीमारी का इलाज करना चाहते हैं यही कारण है, बाइबिल कहती है, परमेश्वर प्रेम है।

### प्रभु यीशु का क्रूस मरण

जब प्रभु यीशु क्रूस पर, मानव पापमोचन के लिये मृत्यु की कीमत अदा करते हैं, तो उनके साथ एक तरफ एक हत्यारा डाकू भी क्रूस पर मर रहा था। उसने प्रभु यीशु के सामने अपने दुष्कर्मों को, पाप को अंगीकार किया, और याचना की, कि ईश्वरीय लोक में उसकी सुधी ली जाये। प्रभु यीशु ने डाकू हत्यारे से कहा कि स्वर्गलोक में तुम मेरे साथ आज ही पहुँचोगे, डाकू को मोक्ष मिल सका।

पाप कर्म ही से नहीं होता है, पर कर्म के पीछे विचारों और उद्देश्यों के रूप में छिपा रहता है। उदाहरण के रूप में प्रभु यीशु हत्या को पाप का फल बोलते हैं, और हृदय में भरे क्रोध को भी हत्या कहते हैं, ईश्वर की दृष्टि में क्रोध और हत्या समान पाप हैं।

प्रभु यीशु में हर पापी के लिये आशा है। चाहे वो शराबी हो या कोई वेश्या, चोर हो या कोई डाकू हत्यारा या झूठा पाखंडी धर्मगुरु, सब की मुक्ति का उपाय है। इसीलिये प्रभु यीशु मसीह की खुशखबरी का प्रचार किया जाता है।

परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया, कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो पर अनंत जीवन पाये। यूहन्ना 3:16

### एक घटना

रूस में एक शहंशाह थे, जिनका नाम ज़ार निकोलस था वो रात में भेषबदल कर अपने सैनिकों की चौकियों में जाकर देखते थे, कि क्या हो रहा है। एक बार उन्होंने एक सैनिक को टेबिल पर सिर रखते और सोते हुये पाया। उसके सामने टेबल पर एक कागज़ रखा था जिसमें लाखों रुपये, जो उसने बहुत से लोगों से कर्ज़ में लिये थे उनका हिसाब था। और नीचे लिखा था, “कौन मेरा कर्ज़ चुकायेगा?” ज़ार निकोलस ने कलम निकालकर वहाँ अपने हस्ताक्षर कर दिये और लिखा “मैं चुकाऊँगा” आत्महत्या की ओर बढ़ने वाले सैनिक को मुक्ति मिली यह एक सच्ची घटना है, पर यही सत्य प्रभु यीशु मसीह ने दिखाया हमारे पापों की कीमत परमेश्वर के न्याय के अनुसार, मृत्युदंड द्वारा ही अदा की जा सकती थी। इसीलिये वे पापमोचन के लिये स्वयं बलि बनते हैं।

शारीरिक मृत्यु और उसके उपरान्त आत्मिक मृत्यु जो हमें नरक की आग में ले जाती है उससे निकास प्रभु यीशु में प्राप्त है।

### आखिर प्रभु यीशु ने किया क्या है?

प्रभु यीशु ने स्वर्ग के अपने ईश्वरीय अधिकार को छोड़ा अपने ताज को अलग किया। मनुष्य रूप धारण किया और कंगाल की तरह गरीब बनकर वे इस संसार में आये (फिलिप्पियों 2:5-10)

मनुष्य मात्र के सेवक बने, और स्वर्गीय पिता के प्रेम को प्रगट किया और क्रूस

की दर्दनाक मृत्यु हमारे पापों के लिए उठाई। प्रभु, यीशु के क्रूस पर इस संसार का न्याय नहीं अन्याय लटका हुआ था। मनुष्य का क्रोध, ईर्ष्या, लालच और घमंड लटका था। उन्हें कब्र में दफनाया गया पर तीसरे दिन अपनी ईश्वरीय सामर्थ को प्रगट करते हैं। वे जीवित हो उठे, यरूशलेम शहर और आसपास के सैकड़ों लोगों को दिखाई दिये, और ईश्वरीय राज्य के भेदों को लोगों पर प्रगट किया। सैकड़ों लोगों के देखते देखते उनका स्वर्गारोहण हुआ। उन्होंने कहा मैं फिर दोबारा लौट कर आऊँगा, और तब संसार का न्याय होगा।

ये बातें कथा-कहानी नहीं है, पर इतिहास में घटी सत्य घटनायें हैं।

परमेश्वर कहता है, मनुष्य का एक बार जन्म लेना और उसके बाद न्याय होना अवश्य है।

### अब सवाल क्या है?

आपके पास अंधकार है, या जीवित ईश्वर का प्रकाश? सत्य है, या मनुष्य का झूठ? आशा है या लगातार निराशा? हार है, या परमेश्वर का जीवन? पापमोचन या दिखावटी धर्म करम?

क्या आप प्रभु यीशु को स्वीकार करना चाहते हैं? वे जीवित हैं क्या आप उनपर भरोसा करना चाहते हैं? प्रभु यीशु सच्ची शांति देते हैं। ऐसी शांति जो भय को मिटा देती है। और दुःख पर विजय देती है।

प्रभु यीशु का नाम लेकर देखिये, आज आप मोक्ष पा सकते हैं। चाहे आप किसी धर्म-जाती रंग-रूप के क्यों न हों, प्रभु

यीशु पर विश्वास करिये उसका नाम लीजिये और मेरे साथ संपूर्ण विश्वास के साथ प्रार्थना दोहराइये।

प्रभु यीशु मसीह इस संसार में आये, वे सृष्टिकर्ता थे, लेकिन संसार ने उन्हें नहीं पहिचाना, प्रभु यीशु ज्योति थे पर अंधकार ने उन्हें ग्रहण नहीं किया, वे अपने घर आये और उनके अपनों ने उन्हें स्वीकार नहीं किया (यूहन्ना 1:5,10,11)

प्रभु यीशु आज जीवित है, वो कब्र में नहीं है, वो कोई निर्जीव वस्तु, तस्वीर या मात्र शक्ति नहीं हैं। वो सृष्टिकर्ता हैं, जिन्होंने परमेश्वर के स्वरूप में हम सबकी रचना की है,

### मोक्ष प्रार्थना

हे प्रभु यीशु मैं कर्म से विचारों और उद्देश्यों से पापी हूँ, आप स्वयं परमेश्वर पुत्र बन कर आये आपने मेरे पापों की कीमत चुकाने के लिये अपना पवित्र खून बहाया और मृत्यु उठाई और आज आप जीवित हैं। आप मेरे पापों को क्षमा करें मुझे नया जीवन दें।

अपनी पवित्र आत्मा का दान दें, ताकि मैं आपका जीवन पा सकूँ, और सिर्फ आपके मार्ग पर चल सकूँ। आज से मैं आपको अपना गुरु बनाता हूँ। मेरा आपके ऊपर संपूर्ण विश्वास और भरोसा है।

**आमीन्**



# योहन्ना का सुसमाचार

## प्रारंभ देहधारण और जीवन

- 1** प्रारंभ में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।  
2 वह प्रारंभ में परमेश्वर के साथ था।  
3 सब कुछ उसी के द्वारा रचा गया और जो कुछ अस्तित्व में है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना अस्तित्व में नहीं आई।  
4 उस में जीवन था; और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति था।

## ज्योति स्वरूप सृष्टिकर्ता का आगमन और अपनों में तिरस्कार

- 5 और ज्योति अन्धकार में चमकती है; और अन्धकार ने उसे ग्रहण नहीं किया।  
6 एक मनुष्य आये जो परमेश्वर की ओर से भेजे गये थे उन का नाम योहन्ना था।  
7 वे गवाही देने आये, कि ज्योति की गवाही दे, ताकि सब उनके द्वारा विश्वास लाएं।  
8 वे स्वयं तो वह ज्योति न थे, परन्तु उस ज्योति की गवाही देने के लिये आये थे।  
9 सच्ची ज्योति जो हर एक मनुष्य को प्रकाशित करती है, संसार में आनेवाली थी।  
10 यीशु जगत में थे, और जगत उनके द्वारा उत्पन्न हुआ, पर जगत ने उन्हें नहीं पहिचाना।  
11 यीशु अपने घर आये और उनके अपनों ने उन्हें ग्रहण नहीं किया।

## परमेश्वर की संतान

- 12 परन्तु जितनों ने उन्हें ग्रहण किया, उनको उन्होंने परमेश्वर की संतान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो यीशु के नाम पर विश्वास रखते हैं।  
13 वे न तो लोहू से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं।

14 और वचन ने देहधारण किया; और अनुग्रह और सत्य से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में आवास किया, और हम ने यीशु की ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकमात्र पुत्र की महिमा।

## योहन्ना बपतिस्मा देने वाले की गवाही

- 15 योहन्ना ने यीशु के विषय में गवाही दी, और पुकारकर कहा, कि ये वही हैं, जिनका मैं ने वर्णन किया, कि जो मेरे बाद आ रहे हैं, वे मुझ से बढ़कर हैं क्योंकि वे मुझ से पहिले थे।  
16 क्योंकि उन की परिपूर्णता से हम सब ने अनुग्रह पर अनुग्रह प्राप्त किया।  
17 क्योंकि व्यवस्था तो मूसा के द्वारा दी गई थी; परन्तु अनुग्रह, और सत्य यीशु मसीह के द्वारा आया।  
18 परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा,

परन्तु एकमात्र पुत्र जो पिता की गोद में है, उन्होंने उसे प्रगट किया है।

19 योहन्ना की गवाही यह है, कि जब यहूदियों ने यरूशलेम से धर्माधिकारी याजकों और लेवियों को उन से यह पूछने के लिये भेजा, कि आप कौन हैं?

20 तो उन्होंने यह मान लिया, और इनकार नहीं किया परन्तु मान लिया कि मैं मसीह नहीं हूँ।

21 तब उन्होंने उन से पूछा, तो फिर कौन हैं? क्या आप एलिय्याह हैं? उन्होंने कहा, मैं नहीं हूँ: तो क्या आप वे नबी हैं? उन्होंने उत्तर दिया, कि नहीं।

22 तब उन्होंने ने योहन्ना से पूछा, फिर आप हैं कौन? ताकि हम अपने भेजनेवालों को उत्तर दें; आप अपने विषय में क्या कहते हैं?

23 योहन्ना ने कहा, मैं जैसा यशायाह नबी ने कहा है, जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द हूँ कि “तुम प्रभु का मार्ग सीधा करो।”

24 ये फरीसियों की ओर से भेजे गए थे।

25 उन्होंने ने योहन्ना से यह प्रश्न पूछा, कि यदि आप न मसीह हैं, और न एलिय्याह, और न वे नबी हैं, तो फिर बपतिस्मा क्यों देते हैं?

26 योहन्ना ने उन को उत्तर दिया, कि मैं तो जल से बपतिस्मा देता हूँ; परन्तु आप लोगों के बीच में एक व्यक्ति खड़े हैं, जिसे आप नहीं जानते।

27 अर्थात् मेरे बाद आनेवाले हैं, जिनकी जूती का बन्ध मैं खोलने के योग्य नहीं।

28 ये बातें यरदन नदी के पार बैतनिय्याह में हुई, जहां योहन्ना बपतिस्मा देते थे।

### **परमेश्वर के मेम्ने के रूप में यीशु**

29 दूसरे दिन योहन्ना ने यीशु को अपनी ओर आते देखकर कहा, देखो, ये परमेश्वर के मेम्ने हैं, जो संसार के पाप उठा ले जाते हैं।

30 ये वही हैं, जिन के विषय में मैं ने कहा था, कि एक पुरुष मेरे पीछे आते हैं, जो मुझ से श्रेष्ठ हैं, क्योंकि वे मुझ से पहिले थे।

31 और मैं तो उन्हें पहिचानता न था, परन्तु मैं इस कारण जल से बपतिस्मा देता हुआ आया, कि वे इस्राएल पर प्रगट हो जाएँ।

32 और योहन्ना ने यह गवाही दी, कि मैं ने आत्मा को कबूतर के तरह आकाश से उतरते देखा और वह उन पर ठहर गया।

33 और मैं तो उन्हें पहिचानता नहीं था, परन्तु जिस ने मुझे जल से बपतिस्मा देने को भेजा था, उन्होंने ने मुझ से कहा, कि जिस पर तुम आत्मा को उतरते और ठहरते देखो; वही पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देनेवाले हैं।

34 और मैं ने देखा है, और गवाही दी है, कि यही परमेश्वर के पुत्र हैं।

### **यीशु के शिष्य**

35 दूसरे दिन फिर योहन्ना और उनके शिष्यों में से दो जन खड़े हुए थे।

36 और योहन्ना ने यीशु पर जो जा रहे थे नजर करके कहा, देखो, ये परमेश्वर के मेम्ने हैं।

37 तब वे दोनों शिष्य उन की यह बात सुनकर यीशु के पीछे हो लिए।

38 यीशु ने फिरकर और उन को पीछे आते देखकर उन से पूछा, तुम किस की खोज में हो? उन्होंने ने उन से कहा, हे रब्बी, (अर्थात् हे गुरु) आप कहां रहते हैं? यीशु ने उन से कहा, साथ चलो, तो देख लोगे।

39 तब उन्होंने ने आकर उनके रहने का स्थान देखा, और उस दिन उन्हीं के साथ रहे; और यह दसवें घंटे के लगभग था।

40 उन दोनों में से जो योहन्ना की बात सुनकर यीशु के पीछे हो लिए थे, एक तो शमीन पतरस का भाई अन्द्रियास था।

41 और अन्द्रियास ने पहिले अपने सगे

भाई शमौन से मिलकर उस से कहा, कि हम को ख्रिस्त अर्थात् मसीह मिल गया है।

42 वह शमौन को यीशु के पास लाया: यीशु ने उस पर दृष्टि करके कहा, कि तुम योहन्ना के पुत्र शमौन हो, तुम कैफा अर्थात् पतरस कहलाओगे।

43 दूसरे दिन यीशु गलील को जाना चाहते थे; और फिलिप्पुस से मिलकर कहा, मेरे पीछे हो लो।

44 फिलिप्पुस तो अन्द्रियास और पतरस के नगर बैतसैदा का निवासी था।

45 फिलिप्पुस ने नतनएल से मिलकर उस से कहा, कि जिनका वर्णन मूसा ने व्यवस्था में और नबियों ने भी किया है, वे हम को मिल गये हैं; वे यूसुफ के पुत्र, नासरत के यीशु नासरी हैं।

46 नतनएल ने उस से कहा, क्या कोई अच्छी वस्तु भी नासरत से निकल सकती है? फिलिप्पुस ने उस से कहा, चलकर देख लो।

47 यीशु ने नतनएल को अपनी ओर आते देखकर उसके विषय में कहा, देखो, यह वास्तव में इस्राएली है: इस में कपट नहीं।

48 नतनएल ने उन से कहा, आप मुझे कैसे जानते हैं? यीशु ने उस को उत्तर दिया; इस से पहिले कि फिलिप्पुस ने तुम्हें बुलाया, जब तुम अंजीर के पेड़ के नीचे थे, तब मैं ने तुम्हें देखा था।

49 नतनएल ने उन को उत्तर दिया, हे रब्बी, आप परमेश्वर के पुत्र हैं; आप इस्राएल के महाराजा हैं।

50 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, मैं ने जो तुम से कहा, कि अंजीर के पेड़ के नीचे तुम्हें देखा, क्या इसी लिये तुम मुझपर विश्वास करते हो? तुम इस से बड़े बड़े काम देखोगे।

51 फिर उन से कहा, मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि तुम स्वर्ग को खुला हुआ, और

परमेश्वर के स्वर्गदूतों को ऊपर जाते और मनुष्य के पुत्र के ऊपर उतरते देखोगे।

## काना गाँव में यीशु का प्रथम आश्चर्यकर्म

**2** फिर तीसरे दिन गलील के काना में किसी का विवाह था, और यीशु की माता भी वहां थीं।

2 और यीशु और उनके शिष्य भी उस विवाह में आमंत्रित थे।

3 जब दाखरस घट गया, तो यीशु की माता ने उन से कहा, कि उन के पास दाखरस नहीं रहा।

4 यीशु ने उन से कहा, हे स्त्री मुझे आप से क्या काम? अभी मेरा समय नहीं आया है।

5 यीशु की माता ने सेवकों से कहा, जो कुछ तुम से कहें, वही करना।

6 वहां यहूदियों के शुद्ध करने की रीति के अनुसार पत्थर के छः मटके रखे थे, जिन में दो दो, तीन तीन मन समाता था।

7 यीशु ने उन से कहा, मटकों में पानी भर दो: सो उन्होंने ने उन्हें मुंहामुंह भर दिया।

8 तब उन से कहा, अब निकालकर भोज के प्रधान के पास ले जाओ।

9 वे ले गए, जब भोज के प्रधान ने वह पानी चखा, जो दाखरस बन गया था, और नहीं जानता था, कि वह कहां से आया है, (परन्तु जिन सेवकों ने पानी निकाला था, वे जानते थे) तो भोज के प्रधान ने दूल्हे को बुलाकर, उस से कहा।

10 हर एक मनुष्य पहिले अच्छा दाखरस देता है और जब लोग पीकर छक जाते हैं, तब मध्यम देता है; परन्तु आप ने अच्छा दाखरस अब तक रख छोड़ा है।

11 यीशु ने गलील के काना में अपना यह पहिला चिन्ह दिखाकर अपनी महिमा प्रगट की और उनके शिष्यों ने यीशु पर विश्वास किया।

12 इस के बाद वे और उन की माता उनके भाई और उनके शिष्य कफरनहूम को गए और वहां कुछ दिन रहे।

### यरूशलेम के मंदिर से व्यापारियों का निष्कासन

13 यहूदियों का फसह का त्यौहार आने वाला था और यीशु यरूशलेम को गये।

14 और उन्होंने ने मन्दिर में बैल और भेड़ और कबूतर के बेचनेवालों और सर्राफों को बैठे हुए पाया।

15 और रस्सियों का कोड़ा बनाकर, सब भेड़ों और बैलों को मन्दिर से निकाल दिया, और सर्राफों के पैसे बिखरा दिए, और मेजों को उलट दिया।

16 और कबूतर बेचनेवालों से कहा; इन्हें यहां से ले जाओ: मेरे पिता के निवास स्थान को व्यापार का घर मत बनाओ।

17 तब उनके शिष्यों को स्मरण आया कि लिखा है, 'तुम्हारे घर की धुन मुझे खा जाएगी'।

18 इस पर यहूदियों ने यीशु से कहा, आप जो यह करते हैं तो हमें कौन सा चिन्ह दिखाते हैं?

### यीशु के शारीरिक मंदिर का ढाया जाना और तीन दिन में पुनरुत्थान

19 यीशु ने उन को उत्तर दिया; कि इस मन्दिर को ढा दो, और मैं उसे तीन दिन में खड़ा कर दूंगा।

20 यहूदियों ने कहा; इस मन्दिर को बनाने में छियालीस वर्ष लगे हैं, और क्या आप उसे तीन दिन में खड़ा कर देंगे?

21 परन्तु यीशु ने तो अपनी देह के मन्दिर के विषय में कहा था।

22 सो जब वे मृतकों में से जीवित हुए तो उनके शिष्यों को स्मरण आया, कि उन्होंने यह कहा था; और उन्होंने ने पवित्रशास्त्र और

वह वचन जो यीशु ने कहा था, विश्वास किया।

23 जब यीशु यरूशलेम में फसह के समय पर्व में थे, तो बहुतों ने उन चिन्हों को जो वे दिखाते थे देखकर उनके नाम पर विश्वास किया।

24 परन्तु यीशु ने अपने आप को उन के भरोसे पर नहीं छोड़ा, क्योंकि वे सब को जानते थे।

25 और उन्हें आवश्यकता नहीं थी, कि मनुष्य के विषय में कोई गवाही दे, क्योंकि वह आप ही जानते थे, कि मनुष्य के मन में क्या है?

### फरीसी सरदार निकुदेमुस की यीशु से भेंट

**3** फरीसियों में से नीकुदेमुस नामक एक मनुष्य था, जो यहूदियों का सरदार था।

2 उस ने रात को यीशु के पास आकर उन से कहा, हे रब्बी, हम जानते हैं, कि आप परमेश्वर की ओर से गुरु हो कर आये हैं; क्योंकि कोई भी इन चमत्कारों को जो आप दिखाते हैं, यदि परमेश्वर उनके साथ न हो, तो नहीं दिखा सकता।

### नये जन्म का अर्थ

#### और हर व्यक्ति को आवश्यकता

3 यीशु ने उसे उत्तर दिया; कि मैं तुझ से सच सच कहता हूं, यदि कोई नया जन्म नहीं ले तो परमेश्वर का राज्य नहीं देख सकता है।

4 नीकुदेमुस ने यीशु से कहा, मनुष्य जब बूढ़ा हो गया हो, तो फिर कैसे जन्म ले सकता है? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है?

5 यीशु ने उत्तर दिया, मैं तुम से सच सच कहता हूं; जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तब तक वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।

6 क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है।

7 आश्चर्य न करो जो मैं ने कहा; कि तुम्हें नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है।

8 हवा जिधर चाहती है उधर चलती है, और तुम उसका शब्द सुनते हो, परन्तु नहीं जानते, कि वह कहाँ से आती और किधर को जाती है? जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है।

9 नीकुदेमुस ने यीशु को उत्तर दिया; कि ये बातें कैसे हो सकती हैं?

10 यह सुनकर यीशु ने उस से कहा; क्या तुम इस्राएलियों के गुरु हो कर भी इन बातों को नहीं समझते।

11 मैं तुझ से सच सच कहता हूँ कि हम जो जानते हैं, वही कहते हैं, और जिसे हम ने देखा है, उसी की गवाही देते हैं, और तुम हमारी गवाही ग्रहण नहीं करते।

12 जब मैं ने तुम से पृथ्वी की बातें कहीं, और तुम विश्वास नहीं करते, तो यदि मैं तुम से स्वर्ग की बातें कहूँ, तो फिर कैसे विश्वास करोगे?

13 और कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ा, केवल वही जो स्वर्ग से उतरा, अर्थात् मनुष्य का पुत्र जो स्वर्ग में है।

### **क्रूस की मृत्यु द्वारा शाश्वत् जीवन दान**

14 और जिस तरह से मूसा ने जंगल में सांप को ऊंचे पर चढ़ाया, उसी तरह से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊंचे पर चढ़ाया जाए।

15 ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह शाश्वत् जीवन पाए।

16 क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपने एकमात्र पुत्र को दे

दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नष्ट न हो, परन्तु शाश्वत् जीवन पाए।

17 परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा, कि जगत पर दंड की आज्ञा दे परन्तु इस कारण कि जगत उनके द्वारा मोक्ष प्राप्त करे।

18 जो उन पर विश्वास करता है, उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उन पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका; इस कारण कि उस ने परमेश्वर के एकमात्र पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया।

19 और दंड की आज्ञा का कारण यह है कि ज्योति जगत में आई है, और मनुष्यों ने अन्धकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना, क्योंकि उन के कर्म बुरे थे।

20 क्योंकि जो कोई बुरे कर्म करता है, वह ज्योति से शत्रुता रखता है, और ज्योति के निकट नहीं आता, ताकि ऐसा न हो कि उनके कर्मों पर दोष लगाया जाए।

21 परन्तु जो सत्य पर चलता है, वह ज्योति के निकट आता है, ताकि उसके कर्म प्रगट हों, कि वह परमेश्वर की ओर से किए गए हैं।

### **योहन्ना द्वारा यीशु की महिमा**

22 इस के बाद यीशु और उनके शिष्य यहूदिया प्रदेश में आए; और वे वहाँ उन के साथ रहकर बपतिस्मा देने लगे।

23 और योहन्ना भी शालेम् के निकट ऐनोन में बपतिस्मा देते थे। क्योंकि वहाँ बहुत पानी था और लोग आकर बपतिस्मा लेते थे।

24 क्योंकि योहन्ना उस समय तक जेलखाने में नहीं डाले गये थे।

25 वहाँ योहन्ना के शिष्यों का किसी यहूदी के साथ शुद्धि के विषय में वाद-विवाद हुआ।

26 और उन्होंने ने योहन्ना के पास आकर उन से कहा, हे रब्बी, जो व्यक्ति यरदन के पार आपके साथ थे, और जिन की आपने गवाही दी है देखो, वे बपतिस्मा देते हैं, और सब उनके पास आते हैं।

27 योहन्ना ने उत्तर दिया, जब तक मनुष्य को स्वर्ग से न दिया जाए तब तक वह कुछ भी नहीं पा सकता है।

28 तुम तो आप ही मेरे गवाह हो, कि मैं ने कहा, मैं मसीह नहीं हूँ परन्तु उनके आगे भेजा गया हूँ।

29 जिस की दुल्हन है, वही दूल्हा है : परन्तु दूल्हे का मित्र जो खड़ा हुआ उस की सुनता है, दूल्हे के शब्द से बहुत हर्षित होता है; अब मेरा यह हर्ष पूरा हुआ है।

30 अवश्य है कि वे बढ़ें और मैं घटूं।

31 जो ऊपर से आते हैं, वे सर्वोत्तम हैं, जो पृथ्वी से आता है वह पृथ्वी का है; और पृथ्वी की ही बातें कहता है: जो स्वर्ग से आते हैं, वे सब के ऊपर हैं।

32 जो कुछ उन्होंने देखा, और सुना है, उसी की गवाही देते हैं; और कोई उन की गवाही ग्रहण नहीं करता।

33 जिस ने उन की गवाही ग्रहण कर ली है उस ने इस बात पर छाप दे दी है कि परमेश्वर सच्चा है।

34 क्योंकि जिसे परमेश्वर ने जगत में भेजा है, वह परमेश्वर की बातें कहता है: क्योंकि वह आत्मा नाप नापकर नहीं देता है।

35 पिता पुत्र से प्रेम रखते हैं, और उन्होंने सब कुछ उनके हाथ में दे दिया है।

36 जो पुत्र पर विश्वास करता है, शाश्वत् जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर बना रहता है।

## अछूतों के गाँव में यीशु का सामरी स्त्री से वार्तालाप

**4** फिर जब प्रभु को मालूम हुआ, कि फरीसियों ने सुना है, कि यीशु योहन्ना से अधिक शिष्य बनाते हैं, और उन्हें बपतिस्मा देते हैं।

2 (यद्यपि यीशु स्वयं नहीं वरन् उनके शिष्य बपतिस्मा देते थे)।

3 तब वे यहूदिया को छोड़कर फिर गलील को चले गये।

4 और यीशु को सामरिया से होकर जाना अवश्य था।

5 सो वह सूखार नाम सामरिया के एक शहर तक आये, जो उस भूमि के पास है, जिसे याकूब ने अपने पुत्र यूसुफ को दिया था।

6 और याकूब का कूआं भी वहीं था; सो यीशु मार्ग के थके हुये उस कूएं पर योंही बैठ गये, और यह बात छठे घण्टे के लगभग हुई।

7 इतने में एक सामरी स्त्री जल भरने को आई: यीशु ने उस से कहा, मुझे पानी पिलाइये।

8 क्योंकि यीशु के शिष्य तो शहर में भोजन मोल लेने को गए थे।

9 उस सामरी स्त्री ने यीशु से कहा, आप यहूदी होकर मुझ सामरी स्त्री से पानी क्यों मांगते हैं? (क्योंकि यहूदी सामरियों के साथ किसी प्रकार का व्यवहार नहीं रखते थे)।

## जीवन का जल

10 यीशु ने उत्तर दिया, यदि तुम परमेश्वर के वरदान को जानती, और यह भी जानती कि वह कौन है जो तुझ से कहता है; मुझे पानी पिला तो तुम उस से मांगती, और वह तुझे जीवन का जल देता।

11 स्त्री ने यीशु से कहा, हे प्रभु, आपके पास जल भरने को तो कुछ है भी नहीं, और

कूआं गहिरा है: तो फिर वह जीवन का जल आपके पास कहां से आया?

12 क्या आप हमारे पिता याकूब से बड़े हैं, जिस ने हमें यह कूआं दिया; और आप ही अपनी सन्तान, और अपने दोरों समेत उस में से पीया?

13 यीशु ने उस को उत्तर दिया, कि जो कोई यह जल पीएगा वह फिर प्यासा होगा।

14 परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूंगा, वह फिर अनन्तकाल तक प्यासा न होगा: वरन् जो जल मैं उसे दूंगा, वह उस में एक सोता बन जाएगा जो शाश्वत् जीवन के लिये उमड़ता रहेगा।

15 स्त्री ने यीशु से कहा, हे प्रभु, वह जल मुझे भी दें ताकि मैं प्यासी न होऊँ और न जल भरने को इतनी दूर आऊँ।

16 यीशु ने उस से कहा, जाकर, अपने पति को यहां बुला लाओ।

17 स्त्री ने उत्तर दिया, कि मैं बिना पति की हूँ: यीशु ने उस से कहा, तुम ठीक कहती हो कि मैं बिना पति की हूँ।

18 क्योंकि तुम पांच पति कर चुकी हो, और जिस के पास तुम अब हो वह भी तुम्हारा पति नहीं है यह तुम ने सच कहा है।

19 स्त्री ने यीशु से कहा, हे प्रभु, मुझे मालूम होता है कि आप नबी हैं।

### आत्मा और सत्य से आराधना

20 हमारे बापदादों ने इसी पहाड़ पर आराधना की है: और आप कहते हैं कि वह जगह जहां आराधना करना चाहिए यरूशलेम में है।

21 यीशु ने उस से कहा, हे नारी, मेरी बात पर भरोसा करो कि वह समय आता है कि तुम न तो इस पहाड़ पर पिता का भजन करोगे न यरूशलेम में।

22 तुम लोग जिसे नहीं जानते, उसकी

आराधना करते हो; और हम जिसे जानते हैं उसकी आराधना करते हैं; क्योंकि उद्धार यहूदियों में से है।

23 परन्तु वह समय आता है, वरन् अब भी है जब सच्चे भक्त पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही आराधक ढूंढता है।

24 परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि परमेश्वर के आराधक आत्मा और सच्चाई से आराधना करें।

### मैं ही मसीह हूँ

25 स्त्री ने यीशु से कहा, मैं जानती हूँ कि मसीह जो ख्रिस्त कहलाते हैं, आनेवाले हैं; जब वे आएंगे, तो हमें सब बातें बताएंगे।

26 यीशु ने उस से कहा, मैं जो तुझ से बातें कर रहा हूँ, वही हूँ।

27 इतने में उनके शिष्य आ गए, और आश्चर्य करने लगे, कि वह एक स्त्री से बातें कर रहे हैं; तौभी किसी ने न कहा, कि आप क्या चाहते हैं? या किस लिये उस से बातें करते हैं।

28 तब स्त्री अपना घड़ा छोड़कर नगर में चली गई, और लोगों से कहने लगी।

29 आओ, एक मनुष्य को देखो, जिस ने सब कुछ जो मैं ने किया मुझे बता दिया है: कहीं यही तो मसीह नहीं हैं?

30 सो वे नगर से निकलकर यीशु के पास आने लगे।

### मेरा भोजन पिता की इच्छा पूरी करना है

31 इतने में उनके शिष्य यीशु से यह बिनती करने लगे, 'हे गुरु, कुछ खा लीजिये।'।

32 परन्तु यीशु ने उन से कहा, मेरे पास खाने के लिये वह भोजन है जिसे तुम नहीं जानते।

33 तब शिष्यों ने आपस में कहा, क्या कोई यीशु के लिए कुछ खाने को लाया है?

34 यीशु ने उन से कहा, मेरा भोजन यह है, कि अपने भेजनेवाले की इच्छा का पालन करूँ और उसका काम पूरा करूँ।

### कटनी और मजदूरी

35 क्या तुम नहीं कहते, कि कटनी होने में अब भी चार महीने पड़े हैं? देखो, मैं तुम से कहता हूँ, अपनी आँखें उठाकर खेतों पर दृष्टि डालो, कि वे कटनी के लिये पक चुकी हैं।

36 और काटनेवाला मजदूरी पाता है और अनन्त जीवन के लिये फल बटोरता है; ताकि बोनेवाला और काटनेवाला दोनों मिलकर आनन्द करें।

37 क्योंकि इस पर यह कहावत ठीक बैठती है कि बोनेवाला और है और काटनेवाला और।

38 मैं ने तुम्हें वह खेत काटने के लिये भेजा, जिस में तुम ने परिश्रम नहीं किया: औरों ने परिश्रम किया और तुम उन के परिश्रम के फल में भागी हुए।

### यीशु पर सामरियों का विश्वास

39 और उस नगर के बहुत सामरियों ने उस स्त्री के कहने से, जिस ने यह गवाही दी थी, कि यीशु ने सब कुछ जो मैं ने किया है, मुझे बता दिया, विश्वास किया।

40 जब ये सामरी यीशु के पास आए, और विनती करने लगे, कि हमारे यहां और रुकें तब यीशु वहां दो दिन और रहे।

41 और उनके वचन के कारण और भी बहुतेरों ने विश्वास किया।

42 और उस स्त्री से कहा, अब हम तुम्हारे कहने ही से विश्वास नहीं करते; क्योंकि हम ने स्वयं ही सुन लिया है, और जानते हैं कि यही सचमुच में जगत के मोक्षदाता हैं।

### यीशु का गलील आगमन

43 फिर उन दो दिनों के बाद यीशु वहां से निकल कर गलील को गये।

44 क्योंकि यीशु ने आप ही साक्षी दी, कि नबी अपने देश में आदर नहीं पाता है।

45 जब यीशु गलील में आये, तो गलीली आनन्द के साथ उन से मिले; क्योंकि जितने काम उन्होंने यरूशलेम में पर्व के समय किए थे, उन्होंने ने उन सब को देखा था, क्योंकि वे भी पर्व में गए थे।

### राजकर्मचारी के पुत्र की बीमारी दूर होना

46 तब यीशु फिर गलील के काना में आये, जहां उन्होंने पानी को दाखरस बनाया था: और वहाँ राजा का एक कर्मचारी था जिस का पुत्र कफरनहूम में बीमार था।

47 वह यह सुनकर कि यीशु यहूदिया से गलील में आ गये हैं, उनके पास गया और उनसे निवेदन किया कि चलकर मेरे पुत्र को स्वस्थ कर दें: क्योंकि वह मरने पर था।

48 यीशु ने उस से कहा, जब तक तुम और अद्भुत काम नहीं देखोगे तब तक तुम विश्वास नहीं करोगे।

49 राजा के कर्मचारी ने यीशु से कहा, हे प्रभु, मेरे पुत्र की मृत्यु होने से पहिले मेरे साथ चलिये।

50 यीशु ने उस से कहा, जाओ, तुम्हारा पुत्र जीवित है: उस व्यक्ति ने यीशु की कही हुई बात पर विश्वास किया, और चला गया।

51 वह मार्ग में जा रहा था, कि उसके सेवक उस से आ मिले और कहने लगे कि आपका पुत्र जीवित है।

52 उस ने उन से पूछा कि किस घड़ी वह अच्छा होने लगा? उन्होंने ने उन से कहा, कल सातवें घण्टे में उसका बुखार उतर गया।

53 तब पिता जान गया, कि यह उसी घड़ी हुआ जिस घड़ी यीशु ने उस से कहा, तुम्हारा पुत्र जीवित है, और उस ने और उसके सारे घराने ने विश्वास किया।

54 यह दूसरा आश्चर्यकर्म था, जो यीशु ने यहूदिया से गलील में आकर दिखाया।

### यरूशलेम में अड़तीस वर्ष के रोगी का स्वस्थ होना

**5** इन बातों के बाद यहूदियों का एक पर्व आया और यीशु यरूशलेम को गये।

2 यरूशलेम में भेड़-फाटक के पास एक कुण्ड है जो इब्रानी भाषा में बैतहसदा कहलाता है, और उसके पांच ओसारे हैं।

3 इन में बहुत से बीमार, अन्धे, लंगड़े और सूखे अंगवाले (पानी के हिलने की आशा में) पड़े रहते थे।

4 (क्योंकि नियुक्त समय पर परमेश्वर के स्वर्गदूत कुण्ड में उतरकर पानी को हिलाया करते थे: पानी हिलते ही जो कोई पहिले उतरता था वह स्वस्थ हो जाता था चाहे उसकी कोई बीमारी क्यों न हो।)

5 वहां एक मनुष्य था, जो अड़तीस वर्ष से बीमारी में पड़ा था।

6 यीशु ने उसे पड़ा हुआ देखकर और जानकर कि वह बहुत दिनों से इस दशा में पड़ा है, उस से पूछा, क्या तुम स्वस्थ होना चाहते हो?

7 उस बीमार ने यीशु को उत्तर दिया, कि हे प्रभु, मेरे पास कोई मनुष्य नहीं, कि जब पानी हिलाया जाए, तो मुझे कुण्ड में उतारे; परन्तु मेरे पहुंचते पहुंचते दूसरा मुझ से पहिले उतर पड़ता है।

8 यीशु ने उस से कहा, उठो, और अपनी खाट उठाकर चलो फिरो।

9 वह मनुष्य तुरन्त स्वस्थ हो गया, और

अपनी खाट उठाकर चलने फिरने लगा।

### सब्त के दिन का विवाद

10 वह सब्त (शनिवार) का दिन था। इसलिये यहूदी उस से, जो स्वस्थ हुआ था, कहने लगे, कि आज तो सब्त का दिन है, और तुम्हारा खाट उठाना उचित नहीं है।

11 उस ने उन्हें उत्तर दिया, कि जिस ने मुझे स्वस्थ किया, उसी ने मुझ से कहा, अपनी खाट उठाकर चल फिर।

12 उन्होंने ने उस से पूछा, वह कौन मनुष्य है जिस ने तुझ से कहा, खाट उठाकर चल फिर?

13 परन्तु जो स्वस्थ हो गया था, वह नहीं जानता था वह कौन है; क्योंकि उस जगह में भीड़ होने के कारण यीशु वहां से हट गये थे।

14 इन बातों के बाद वह यीशु को मन्दिर में मिला, तब यीशु ने उस से कहा, देखो, तुम तो स्वस्थ हो गये हो; फिर से पाप मत करना, ऐसा न हो कि इससे कोई भारी विपत्ति तुझ पर आ पड़े।

15 उस मनुष्य ने जाकर यहूदियों से कह दिया, कि जिस ने मुझे स्वस्थ किया है, वह यीशु हैं।

16 इस कारण यहूदी यीशु को सताने लगे, क्योंकि वह ऐसे ऐसे काम सब्त के दिन करते थे।

17 इस पर यीशु ने उन से कहा, कि मेरे पिता अब तक काम करते हैं, और मैं भी काम करता हूं।

18 इस कारण यहूदी और भी अधिक उनको मार डालने का प्रयत्न करने लगे, कि वह न केवल सब्त के दिन की विधि को तोड़ते थे परन्तु परमेश्वर को अपना पिता कह कर, अपने आप को परमेश्वर के बराबर ठहराते थे।

## पिता पुत्र का संबंध और पुत्र के अधिकार

19 इस पर यीशु ने उन से कहा, मैं तुम से सच सच कहता हूँ, पुत्र स्वयं से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है, क्योंकि जिन जिन कामों को पिता करते हैं उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है।

20 क्योंकि पिता पुत्र से प्रेम रखते हैं और जो जो काम वह आप करते हैं, वह सब उसे दिखाते हैं; और वह इन से भी बड़े काम उसे दिखाएंगे, ताकि तुम आश्चर्य करो।

21 क्योंकि जैसा पिता मरे हुएों को उठाते और जिलाते हैं, वैसे ही पुत्र भी जिन्हें चाहते हैं उन्हें जिलाते हैं।

22 और पिता किसी का न्याय भी नहीं करते, परन्तु उन्होंने न्याय करने का सब काम पुत्र को सौंप दिया है।

23 इसलिये कि सब लोग जैसे पिता का आदर करते हैं वैसे ही पुत्र का भी आदर करें: जो पुत्र का आदर नहीं करता, वह पिता का जिस ने उन्हें भेजा है, आदर नहीं करता।

24 मैं तुम से सच सच कहता हूँ, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है, शाश्वत् जीवन उसका है और उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु के पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।

25 मैं तुम से सच सच कहता हूँ, वह समय आता है, और अब है, जिस में मृतक परमेश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे, और जो सुनेंगे वे जीवित होंगे।

26 क्योंकि जिस रीति से पिता अपने आप में जीवन रखते हैं, उसी रीति से उन्होंने पुत्र को भी यह अधिकार दिया है कि अपने आप में जीवन रखें।

27 साथ ही साथ उन्हें न्याय करने का भी

अधिकार दिया है, इसलिये कि वे मनुष्य पुत्र हैं।

28 इस से अचम्भा मत करो, क्योंकि वह समय आता है, कि जितने कब्रों में हैं, उनका शब्द सुनकर बाहर निकलेंगे।

29 जिन्होंने ने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे और जिन्होंने ने बुराई की है वे दण्ड के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे।

30 मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता; जैसा सुनता हूँ, वैसा न्याय करता हूँ, और मेरा न्याय सच्चा है; क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, परन्तु अपने भेजनेवाले की इच्छा चाहता हूँ।

## यीशु के विषय गवाही

31 यदि मैं स्वयं ही अपनी गवाही दूँ; तो मेरी गवाही सच्ची नहीं।

32 एक और है जो मेरी गवाही देता है, और मैं जानता हूँ कि उसकी गवाही सच्ची है।

33 तुम ने योहन्ना से पुछवाया और उस ने सत्य की गवाही दी है।

34 परन्तु मैं अपने विषय में मनुष्य की गवाही नहीं चाहता हूँ तौभी मैं ये बातें इसलिये कहता हूँ, कि तुम्हें मोक्ष प्राप्त हो।

35 योहन्ना तो जलता और चमकता हुआ दीपक था; और तुम्हें कुछ देर तक उस की ज्योति में आनन्दित होना अच्छा लगा।

36 परन्तु मेरे पास जो गवाही है वह योहन्ना की गवाही से बड़ी है: क्योंकि जो काम पिता ने मुझे पूरा करने को सौंपा है अर्थात् यही काम जो मैं करता हूँ, वे मेरे गवाह हैं, कि पिता ने मुझे भेजा है।

37 और पिता जिन्होंने मुझे भेजा है, उन्हीं ने मेरी गवाही दी है: तुम ने न कभी पिता का शब्द सुना, और न उनका रूप देखा है।

38 और उनके वचन को मन में स्थिर नहीं रखते क्योंकि जिसे पिता ने भेजा है उनका विश्वास नहीं करते।

39 तुम पवित्रशास्त्र में ढूंढते हो, क्योंकि समझते हो कि उस में अनन्त जीवन तुम्हें मिलता है, और शास्त्र वही है, जो मेरी गवाही देता है।

### यीशु की उपेक्षा

40 फिर भी तुम जीवन पाने के लिये मेरे पास आना नहीं चाहते।

41 मैं मनुष्यों से आदर नहीं चाहता हूँ।

42 परन्तु मैं तुम्हें जानता हूँ, कि तुम में परमेश्वर का प्रेम नहीं है।

43 मैं अपने पिता के नाम से आया हूँ, और तुम मुझे ग्रहण नहीं करते हो यदि कोई और अपने ही नाम से आएगा, तो उसे ग्रहण कर लोगे।

44 तुम जो एक दूसरे से आदर चाहते हो और वह आदर जो अद्वैत परमेश्वर की ओर से है, नहीं चाहते, तो किस प्रकार विश्वास कर सकते हो?

45 यह न सोचो, कि मैं पिता के साम्हने तुम पर दोषारोपण करूँगा: तुम पर दोष लगानेवाला तो मूसा है जिस पर तुम ने आशा रखी है।

46 क्योंकि यदि तुम मूसा का विश्वास करते, तो मेरा भी विश्वास करते, इसलिये कि मूसा ने मेरे विषय में लिखा है।

47 परन्तु यदि तुम मूसा की लिखी हुई बातों का विश्वास नहीं करते, तो मेरी बातों पर कैसे विश्वास करोगे।

### पाँच हजार से अधिक लोगों को चमत्कारिक भोजन

**6** इन बातों के बाद यीशु गलील की झील अर्थात् तिबिरियास की झील के पास गये।

2 और एक बड़ी भीड़ यीशु के पीछे हो ली क्योंकि जो आश्चर्यकर्म वह बीमारों पर दिखाते थे वे उन्हें देखते थे।

3 तब यीशु पहाड़ पर चढ़कर अपने शिष्यों के साथ वहाँ बैठ गये।

4 और यहूदियों के फसह का पर्व निकट था।

5 तब यीशु ने एक बड़ी भीड़ को अपने पास आते देखा, और फिलिप्पस से कहा, कि हम इन के भोजन के लिये कहां से रोटी मोल लाएं?

6 परन्तु यीशु ने ये बात उसे परखने के लिये कही थी, क्योंकि वह आप जानते थे कि वे क्या करेंगे।

7 फिलिप्पस ने यीशु को उत्तर दिया, कि दो सौ दीनार की रोटी भी उन के लिये पूरी न होगी कि हर एक को थोड़ी थोड़ी मिल सके।

8 उनके शिष्यों में से शमौन पतरस के भाई अन्द्रियास ने यीशु से कहा।

### पाँच रोटी और दो मछली

9 यहां एक बालक है जिस के पास जब की पांच रोटी और दो मछलियां हैं, परन्तु इतने लोगों के लिये वे क्या हैं।

10 यीशु ने कहा, कि लोगों को बैठा दो। उस जगह बहुत घास थी: तब वे लोग जो गिनती में लगभग पांच हजार के थे, बैठ गए।

11 तब यीशु ने रोटियां लीं, और धन्यवाद करके बैठनेवालों को बांट दीं: और वैसे ही मछलियों में से जितनी वे चाहते थे बांट दीं।

12 जब वे खाकर तृप्त हो गए तो यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, कि बचे हुए टुकड़े बटोर लो, कि कुछ फेंका न जाए।

13 सो उन्होंने ने बटोरा, और जब की पांच रोटियों के टुकड़े जो खानेवालों से बच रहे थे उन की बारह टोकरियां भरीं।

### यीशु को राजा बनाने का प्रयास

14 तब जो आश्चर्यकर्म यीशु ने किया था उसे वे लोग देखकर कहने लगे; कि वह नबी जो जगत में आनेवाला था निश्चय यही है।

15 यीशु यह जानकर कि वे मुझे राजा बनाने के लिये आकर पकड़ना चाहते हैं, फिर पहाड़ पर अकेले चले गये।

### यीशु का पानी पर चलना

16 फिर जब संध्या हुई, तो यीशु के शिष्य झील के किनारे गए।

17 और नाव पर चढ़कर झील के पार कफरनहूम को जाने लगे: उस समय अन्धेरा हो गया था, और यीशु अभी तक उन के पास नहीं आये थे।

18 और आन्धी के कारण झील में लहरें उठने लगीं।

19 सो जब वे खेत खेत तीन चार मील के लगभग निकल गए, तो उन्होंने ने यीशु को झील पर चलते, और नाव के निकट आते देखा, और डर गए।

20 परन्तु यीशु ने उन से कहा, कि मैं हूं; डरो मत।

21 सो वे यीशु को नाव पर चढ़ा लेने के लिये तैयार हुए और तुरन्त वह नाव उस स्थान पर जा पहुंची जहां वे जाते थे।

### भीड़ द्वारा यीशु की खोज

22 दूसरे दिन उस भीड़ ने, जो झील के पार खड़ी थी, यह देखा, कि यहां एक को छोड़कर और कोई छोटी नाव न थी, और यीशु अपने शिष्यों के साथ उस नाव पर नहीं चढ़े थे, परन्तु केवल उनके शिष्य चले गए थे।

23 (और छोटी नावें तिबिरियास से उस

जगह के निकट आई, जहां उन्होंने ने प्रभु के धन्यवाद करने के बाद रोटी खाई थी)।

24 सो जब भीड़ ने देखा, कि यहां न यीशु हैं, और न उनके शिष्य, तो वे भी छोटी छोटी नावों पर चढ़ के यीशु को ढूंढते हुए कफरनहूम को पहुंचे।

25 और झील के पार यीशु से मिलकर कहा, हे गुरु, आप यहां पर कब आये?

### यीशु जीवन की रोटी है

26 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, कि मैं तुम से सच सच कहता हूं, तुम मुझे इसलिये नहीं ढूंढते हो कि तुम ने अचम्बे के काम देखे, परन्तु इसलिये कि तुम रोटियां खाकर तृप्त हुए।

27 नाशमान भोजन के लिये परिश्रम न करो, परन्तु उस भोजन के लिये जो अनंत जीवन तक ठहरता है, जिसे मनुष्य का पुत्र तुम्हें देगा, क्योंकि पिता, अर्थात् परमेश्वर ने उसी पर मोहर लगाई है।

### परमेश्वर के कार्य

28 उन्होंने ने यीशु से कहा, परमेश्वर के कार्य करने के लिये हम क्या करें?

29 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया; परमेश्वर का कार्य यह है, कि तुम उस पर, जिसे पिता ने भेजा है, विश्वास करो।

30 तब उन्होंने ने यीशु से कहा, फिर आप कौन सा चिन्ह दिखाते हैं कि हम उसे देखकर आपका विश्वास करें, आप कौन सा काम दिखाते हैं?

### स्वर्ग से मन्ना और जीवन की रोटी

31 हमारे बापदादों ने जंगल में मन्ना खाया था जैसा लिखा है; कि उस ने उन्हें खाने के लिये स्वर्ग से रोटी दी।

32 यीशु ने उन से कहा, मैं तुम से सच

सच कहता हूँ, कि मूसा ने तुम्हें वह रोटी स्वर्ग से नहीं दी थी, परन्तु मेरे पिता तुम्हें सच्ची रोटी स्वर्ग से देते हैं।

33 क्योंकि परमेश्वर की रोटी वही है, जो स्वर्ग से उतरकर जगत को जीवन देती है।

34 तब उन्होंने येीशु से कहा, हे प्रभु, यह रोटी हमें सर्वदा दिया करें।

35 येीशु ने उन से कहा, जीवन की रोटी मैं हूँ: जो मेरे पास आएगा वह कभी भूखा न होगा और जो मुझ पर विश्वास करेगा, वह कभी प्यासा न होगा।

36 परन्तु मैं ने तुम से कहा, कि तुम ने मुझे देख भी लिया है, तौभी तुम विश्वास नहीं करते।

### **स्वर्गीय पिता द्वारा लोगों पर येीशु का प्रगटीकरण**

37 जो कुछ पिता मुझे देता है वह सब मेरे पास आएगा, और जो कोई मेरे पास आएगा, उसे मैं कभी न निकालूंगा।

38 क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, लेकिन अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने के लिये स्वर्ग से उतरा हूँ।

39 और मेरे भेजनेवाले की इच्छा यह है कि जो कुछ उन्होंने मुझे दिया है, उस में से मैं कुछ न खोऊँ, परन्तु उसे अंतिम दिन में फिर जिलाऊंगा।

40 क्योंकि मेरे पिता की इच्छा यह है, कि जो कोई पुत्र को देखे, और उस पर विश्वास करे, वह अनन्त जीवन पाए; और मैं उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊंगा।

41 सो यहूदी येीशु पर कुड़कुड़ाने लगे, इसलिये कि उन्होंने कहा था; कि जो रोटी स्वर्ग से उतरी, वह मैं हूँ।

42 और उन्होंने ने कहा; क्या ये यूसुफ के पुत्र येीशु नहीं, जिनके माता-पिता को हम

जानते हैं? तो वे क्यों कहते हैं कि मैं स्वर्ग से उतरा हूँ।

43 येीशु ने उन को उत्तर दिया, कि आपस में मत बुड़बुड़ाओ।

44 मेरे पास कोई नहीं आ सकता, जब तक पिता, जिन्होंने मुझे भेजा है, उसे अपनी ओर खींच न लें; और मैं उस को अंतिम दिन फिर जिलाऊंगा।

45 नबियों के लेखों में यह लिखा है, कि वे सब परमेश्वर की ओर से सिखाए हुए होंगे। जिस किसी ने पिता से सुना और सीखा है, वह मेरे पास आता है।

46 यह नहीं, कि किसी ने पिता को देखा है परन्तु जो परमेश्वर की ओर से है, केवल उसी ने पिता को देखा है।

47 मैं तुम से सच सच कहता हूँ, कि जो कोई विश्वास करता है, शाश्वत् जीवन उसी का है।

### **जीवन की रोटी**

48 जीवन की रोटी मैं हूँ।

49 तुम्हारे बापदादों ने जंगल में मन्ना खाया और मर गए।

50 यहाँ वह रोटी है जो स्वर्ग से उतरती है ताकि मनुष्य उस में से खाए और न मरे।

### **येीशु का माँस और लहू भोजन है, जीवन है।**

51 जीवन की रोटी जो स्वर्ग से उतरी वह मैं हूँ। यदि कोई इस रोटी में से खाए, तो सर्वदा जीवित रहेगा और जो रोटी मैं जगत के जीवन के लिये दूंगा, वह मेरा माँस है।

52 इस पर यहूदी यह कहकर आपस में झगड़ने लगे, कि यह मनुष्य कैसे हमें अपना माँस खाने को दे सकता है?

53 येीशु ने उन से कहा; मैं तुम से सच सच कहता हूँ, जब तक मनुष्य के पुत्र का

मांस न खाओ, और उसका लहू न पीओ, तब तक तुम में जीवन नहीं है।

54 जो मेरा मांस खाता है, और मेरा लहू पीता है, शाश्वत् जीवन उसी का है, और मैं अंतिम दिन फिर उसे जिलाऊंगा।

55 क्योंकि मेरा मांस वास्तव में खाने की वस्तु है और मेरा लहू वास्तव में पीने की वस्तु है।

56 जो मेरा मांस खाता और मेरा लहू पीता है, वह मुझ में स्थिर बना रहता है, और मैं उस में।

57 जैसे जीवते पिता ने मुझे भेजा है और मैं पिता के कारण जीवित हूँ, वैसे ही वह भी जो मुझे खाएगा मेरे कारण जीवित रहेगा।

58 जो रोटी स्वर्ग से उतरी वह यही है, बापदादों के समान नहीं कि खाया, और मर गए: जो कोई यह रोटी खाएगा, वह सर्वदा जीवित रहेगा।

59 ये बातें उस ने कफरनहूम के एक आराधनालय में उपदेश देते समय कहीं।

60 इसलिये यीशु के शिष्यों में से बहुतों ने यह सुनकर कहा, कि यह बात कठिन है; इसे कौन सुन सकता है?

61 यीशु ने अपने मन में यह जान कर कि मेरे शिष्य आपस में इस बात पर कुड़कुड़ाते हैं, उन से पूछा, क्या इस बात से तुम्हें ठोकर लगती है?

62 और यदि तुम मनुष्य के पुत्र को जहां वह पहिले था, वहां ऊपर जाते देखोगे, तो क्या होगा?

63 आत्मा तो जीवनदायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं : जो बातें मैं ने तुम से कही हैं वे आत्मा हैं, और जीवन भी हैं।

64 परन्तु तुम में से कितने ऐसे हैं जो विश्वास नहीं करते: क्योंकि यीशु तो पहिले ही से जानते थे कि जो विश्वास नहीं करते, वे कौन हैं? और कौन उन्हें पकड़वाएगा।

65 और यीशु ने कहा, इसी कारण मैं ने तुम से कहा था कि जब तक किसी को पिता की ओर से यह वरदान न दिया जाए तब तक वह मेरे पास नहीं आ सकता।

### यीशु द्वारा शिष्यों को चुनौती

66 इस पर उनके शिष्यों में से बहुतेरे वापस फिर गए और उसके बाद यीशु के साथ न चले।

67 तब यीशु ने उन बारहों से पूछा, क्या तुम भी चले जाना चाहते हो?

68 शमौन पतरस ने यीशु को उत्तर दिया, कि हे प्रभु हम किस के पास जाएं? अनन्त जीवन की बातें तो आप ही के पास हैं।

69 और हम ने विश्वास किया है, और जान गए हैं, कि परमेश्वर के पवित्र जन आप ही हैं।

70 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, क्या मैं ने तुम बारहों को नहीं चुन लिया? तौभी तुम में से एक व्यक्ति शैतान है।

71 यह उस ने शमौन इस्करियोती के पुत्र यहूदा के विषय में कहा, क्योंकि यही उन बारहों में से था, जो उन्हें पकड़वाने को था।

### यीशु के भाईयों का अविश्वास

**7** इन बातों के बाद यीशु गलील में फिरते रहे, क्योंकि यहूदी उन्हें मार डालने का यत्न कर रहे थे, इसलिये वे यहूदिया में फिरना न चाहते थे।

2 और यहूदियों का मण्डपों का पर्व निकट था।

3 इसलिये यीशु के भाइयों ने उनसे कहा, यहां से निकलकर यहूदिया में चले जाइये, ताकि जो काम आप करते हैं, उन्हें आपके शिष्य भी देखें।

4 क्योंकि ऐसा कोई नहीं है जो प्रसिद्ध होना चाहे, और छिपकर काम करे: यदि आप

ये काम करते हैं, तो अपने आपको जगत पर प्रगट करें।

5 क्योंकि यीशु के भाई भी उन पर विश्वास नहीं करते थे।

6 तब यीशु ने उन से कहा, मेरा समय अभी तक नहीं आया; परन्तु तुम्हारे लिये सब समय है।

7 जगत तुम से बैर नहीं कर सकता, परन्तु वह मुझ से बैर करता है, क्योंकि मैं उनके विरोध में यह गवाही देता हूं, कि उनके काम बुरे हैं।

8 तुम पर्व में जाओ: मैं अभी इस पर्व में नहीं जाता; क्योंकि अभी तक मेरा समय पूरा नहीं हुआ।

9 वे उन से ये बातें कहकर गलील ही में रह गये।

### पर्व में यीशु का उपदेश

10 परन्तु जब उनके भाई पर्व में चले गए, तो वह स्वयं प्रगट में नहीं, परन्तु मानो गुप्त रूप से गये।

### क्या प्रभु यीशु ही मसीह है?

11 और यहूदी पर्व में उन्हें ढूंढने लगे कि वे कहां हैं?

12 और लोगों में यीशु के विषय में चुपके चुपके बहुत सी बातें हुई: कितने कहते थे; वे भले मनुष्य हैं: और कितने कहते थे; नहीं, वे लोगों को भ्रमाते हैं।

13 तौभी यहूदियों के भय के मारे कोई व्यक्ति यीशु के विषय में खुलकर नहीं बोलता था।

14 और जब पर्व के आधे दिन बीत गए; तो यीशु मन्दिर में जाकर उपदेश देने लगे।

15 तब यहूदियों ने अचम्भा करके कहा, कि इन्हें बिन पढ़े ज्ञान कैसे आ गया?

16 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, कि मेरा

उपदेश मेरा नहीं, परन्तु मेरे भेजनेवाले का है।

17 यदि कोई उस की इच्छा पर चलना चाहे, तो वह इस उपदेश के विषय में जान जाएगा कि वह परमेश्वर की ओर से है, या मैं अपनी ओर से कहता हूं।

18 जो अपनी ओर से कुछ कहता है, वह अपनी ही बड़ाई चाहता है; परन्तु जो अपने भेजनेवाले की बड़ाई चाहता है वही सच्चा है, और उस में अधर्म नहीं।

19 क्या मूसा ने तुम्हें व्यवस्था नहीं दी? तौभी तुम में से कोई व्यवस्था पर नहीं चलता। तुम क्यों मुझे मार डालना चाहते हो?

20 लोगों ने उत्तर दिया; कि आप में दुष्टात्मा है; कौन आपको मार डालना चाहता है?

21 यीशु ने उन को उत्तर दिया, कि मैं ने एक काम किया, और तुम सब अचम्भा करते हो।

22 इसी कारण मूसा ने तुम्हें खतने की आज्ञा दी है (यह नहीं कि वह मूसा की ओर से है परन्तु बाप-दादों से चली आई है), और तुम सब के दिन को मनुष्य का खतना करते हो।

23 जब सब के दिन मनुष्य का खतना किया जाता है ताकि मूसा की व्यवस्था की आज्ञा न टले, तो तुम मुझ पर क्यों इस कारण क्रोध करते हो, कि मैं ने सब के दिन एक मनुष्य को पूरी रीति से स्वस्थ किया।

24 मुंह देखकर न्याय न करो, परन्तु ठीक ठीक न्याय करो।

25 तब कितने यरूशलेमी कहने लगे; क्या यह वही नहीं, जिनको मार डालने का प्रयत्न किया जा रहा है।

26 परन्तु देखो, वे तो खुल्लमखुल्ला बातें करते हैं और कोई उनसे कुछ नहीं कहता; क्या सम्भव है कि सरदारों ने सच सच जान लिया है; कि यही मसीह हैं।

27 इनको तो हम जानते हैं, कि ये कहां के

हैं; परन्तु मसीह जब आएंगे, तो कोई न जानेगा कि वे कहां के हैं।

28 तब यीशु ने मन्दिर में उपदेश देते हुए पुकार के कहा, तुम मुझे जानते हो और यह भी जानते हो कि मैं कहां का हूं : मैं तो आप से नहीं आया परन्तु मेरा भेजनेवाला सच्चा है, उन्हें तुम नहीं जानते।

29 मैं उन्हें जानता हूं; क्योंकि मैं उन की ओर से हूं और उन्हीं ने मुझे भेजा है।

30 इस पर उन्हीं ने यीशु को पकड़ना चाहा तौभी किसी ने उन पर हाथ न डाला, क्योंकि उनका समय अब तक न आया था।

31 और भीड़ में से बहुतेरों ने यीशु पर विश्वास किया, और कहने लगे, कि मसीह जब आएंगे, तो क्या इस से अधिक आश्चर्यकर्म दिखाएंगे जो इन्होंने दिखाए हैं?

### **तुम मुझे ढूंढोगे और नहीं पाओगे**

32 फरीसियों ने लोगों को यीशु के विषय में ये बातें चुपके चुपके करते सुना; और महापुरोहितों और फरीसियों ने यीशु को पकड़ने को सिपाही भेजे।

33 इस पर यीशु ने कहा, मैं थोड़ी देर तक और तुम्हारे साथ हूं; तब अपने भेजनेवाले के पास चला जाऊंगा।

34 तुम मुझे ढूंढोगे, परन्तु नहीं पाओगे और जहां मैं हूं, वहां तुम नहीं आ सकते।

35 यहूदियों ने आपस में कहा, ये कहां जायेंगे, कि हम इन्हें न पाएंगे : क्या वे उन के पास जाएंगे, जो यूनानियों में तित्तर-बित्तर होकर रहते हैं, और यूनानियों को भी उपदेश देंगे?

36 यह क्या बात है जो यीशु ने कही, कि तुम मुझे ढूंढोगे, परन्तु न पाओगे: और जहां मैं हूं, वहां तुम नहीं आ सकते?

### **जीवन जल की नदियों और पवित्र आत्मा**

37 फिर पर्व के अंतिम दिन, जो मुख्य दिन है, यीशु खड़े हुये और उन्होंने पुकार कर कहा, यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आकर पीए।

38 जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्र शास्त्र में आया है उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी।

39 यीशु ने यह वचन उस आत्मा के विषय में कहे, जिसे उन पर विश्वास करनेवाले पाने पर थे; क्योंकि आत्मा अब तक नहीं उतरा था; क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को नहीं पहुंचे थे।

### **यीशु कौन है?**

40 तब भीड़ में से किसी किसी ने ये बातें सुन कर कहा, सचमुच यही वे नबी हैं।

41 औरों ने कहा; ये मसीह हैं, परन्तु किसी ने कहा; क्यों? क्या मसीह गलील से आएंगे?

42 क्या पवित्रशास्त्र में यह नहीं आया, कि मसीह दाऊद के वंश से और बैतलहम गांव से आएंगे जहां दाऊद रहते थे?

43 सो उनके कारण लोगों में फूट पड़ी।

44 उन में से कितने यीशु को पकड़ना चाहते थे, परन्तु किसी ने उन पर हाथ न डाला।

### **सिपाहियों की गवाही और धर्मगुरुओं का अविश्वास**

45 तब सिपाही महापुरोहितों और फरीसियों के पास आए, और उन्हीं ने उन से कहा, तुम यीशु को क्यों नहीं लाए?

46 सिपाहियों ने उत्तर दिया, कि किसी मनुष्य ने कभी ऐसी बातें नहीं करी।

47 फरीसियों ने उन को उत्तर दिया, क्या तुम भी भरमाए गए हो?

48 क्या सरदारों या फरीसियों में से किसी ने भी यीशु पर विश्वास किया है?

49 परन्तु ये लोग जो व्यवस्था नहीं जानते, स्थापित हैं।

50 नीकुदेमुस ने (जो पहिले उनके पास आया था और उन में से एक था), उन से कहा।

51 क्या हमारी व्यवस्था किसी व्यक्ति को जब तक पहिले उस की सुनकर जान न ले, कि वह क्या करता है; दोषी ठहराती है?

52 उन्होंने ने उसे उत्तर दिया; क्या तुम भी गलील के हो दूँदो और देखो, कि गलील से कोई नबी प्रगट नहीं होगा।

53 तब सब कोई अपने अपने घर को गए।

### स्त्री को पत्थरवाह से बचाना और पाप क्षमा

**8** परन्तु यीशु जैतून के पहाड़ पर गये।

2 और सुबह को फिर मन्दिर में आये, और सब लोग यीशु के पास आए; और वे बैठकर उन्हें उपदेश देने लगे।

3 तब शास्त्री और फरीसी एक स्त्री को लाए, जो व्यभिचार में पकड़ी गई थी, और उसे बीच में खड़ा करके यीशु से कहा।

4 हे गुरु, यह स्त्री व्यभिचार करते पकड़ी गई है।

5 व्यवस्था में मूसा ने हमें आज्ञा दी है कि ऐसी स्त्रियों को पत्थरवाह करें: तो आप इस स्त्री के विषय में क्या कहते हैं?

6 उन्होंने ने यीशु को परखने के लिये यह बात कही ताकि उन पर दोष लगाने के लिये कोई बात पाएं, परन्तु यीशु झुककर उंगली से भूमि पर लिखने लगे।

### जो निष्पाप हो वह पहला पत्थर मारे

7 जब वे यीशु से पूछते ही रहे, तो उन्होंने सीधे होकर उन से कहा, कि तुम में जो निष्पाप हो, वही पहिले उसको पत्थर मारे।

8 और फिर झुककर भूमि पर उंगली से लिखने लगे।

9 परन्तु वे यह सुनकर सभी बड़े और छोटे एक एक करके निकल गए, और यीशु अकेले रह गये, और स्त्री वहीं बीच में खड़ी रह गई।

10 यीशु ने सीधे होकर उस से कहा, हे नारी, वे कहां गए? क्या किसी ने तुझ पर दण्ड की आज्ञा न दी।

11 उस ने कहा, हे प्रभु, किसी ने नहीं: यीशु ने कहा, मैं भी तुझ पर दण्ड की आज्ञा नहीं देता; जाओ, और फिर पाप न करना।

### जगत की ज्योति यीशु हैं। उनकी गवाही सही है

12 तब यीशु ने फिर लोगों से कहा, जगत की ज्योति मैं हूं; जो मेरे पीछे आवेगा, वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।

13 फरीसियों ने यीशु से कहा; आप अपनी गवाही स्वयं देते हैं; आपकी गवाही सही नहीं है।

14 यीशु ने उन को उत्तर दिया; कि यदि मैं अपनी गवाही आप देता हूं, तौभी मेरी गवाही ठीक है, क्योंकि मैं जानता हूं, कि मैं कहां से आया हूं और कहां को जाता हूं? परन्तु तुम नहीं जानते कि मैं कहां से आता हूं या कहां को जाता हूं।

15 तुम शरीर के अनुसार न्याय करते हो; मैं किसी का न्याय नहीं करता।

16 और यदि मैं न्याय करूं भी, तो मेरा न्याय सही है; क्योंकि मैं अकेला नहीं, परन्तु मेरे, साथ पिता हैं जिन्होंने मुझे भेजा है।

17 और तुम्हारी व्यवस्था में भी लिखा है; कि दो जनों की गवाही मिलकर ठीक होती है।

18 एक तो मैं आप अपनी गवाही देता हूँ, और दूसरा पिता मेरी गवाही देते हैं जिन्होंने मुझे भेजा है।

19 उन्होंने ने यीशु से कहा, आपके पिता कहां हैं? यीशु ने उत्तर दिया, कि न तुम मुझे जानते हो, न मेरे पिता को, यदि मुझे जानते, तो मेरे पिता को भी जानते।

20 ये बातें यीशु ने मन्दिर में उपदेश देते हुए भण्डार घर में कहीं, और किसी ने यीशु को न पकड़ा; क्योंकि उनका समय अब तक नहीं आया था।

### अपने विषय यीशु के कथन

21 यीशु ने फिर उन से कहा, मैं जाता हूँ और तुम मुझे ढूँढोगे और अपने पाप में मरोगे: जहां मैं जाता हूँ, वहां तुम नहीं आ सकते।

22 इस पर यहूदियों ने कहा, क्या यीशु अपने आप को मार डालेंगे, जो कहते हैं; कि जहां मैं जाता हूँ वहां तुम नहीं आ सकते?

23 यीशु ने उन से कहा, तुम नीचे के हो, मैं ऊपर का हूँ; तुम संसार के हो, मैं संसार का नहीं हूँ।

24 इसलिये मैं ने तुम से कहा, कि तुम अपने पापों में मरोगे; क्योंकि यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूँ, तो अपने पापों में मरोगे।

25 उन्होंने ने यीशु से कहा, आप कौन हैं? यीशु ने उन से कहा, वही हूँ जो प्रारम्भ से तुम से कहता आया हूँ।

26 तुम्हारे विषय में मुझे बहुत कुछ कहना और निर्णय करना है परन्तु मेरा भेजनेवाला सच्चा है; और जो मैं ने उनसे सुना है, वही जगत से कहता हूँ।

27 वे न समझे कि यीशु हम से पिता के विषय में कहते हैं।

28 तब यीशु ने कहा, कि जब तुम मनुष्य के पुत्र को ऊंचे पर चढ़ाओगे, तो जानोगे कि मैं वही हूँ, और स्वेच्छा से कुछ नहीं करता, परन्तु जैसे मेरे पिता ने मुझे सिखाया है, वैसे ही ये बातें कहता हूँ।

29 और मेरा भेजनेवाला मेरे साथ है; उस ने मुझे अकेला नहीं छोड़ा; क्योंकि मैं सर्वदा वही काम करता हूँ, जिस से वे प्रसन्न होते हैं।

30 वे ये बातें कह ही रहे थे, कि बहुतेरों ने उस पर विश्वास किया।

### सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा

31 तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्होंने ने उनका विश्वास किया था, कहा, यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे शिष्य ठहरोगे।

32 और तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।

33 उन्होंने ने यीशु को उत्तर दिया; कि हम तो इब्राहीम के वंश से हैं और कभी किसी के गुलाम नहीं हुए; फिर आप क्यों कहते हैं, कि तुम स्वतंत्र हो जाओगे?

### जो पाप करता है वह पाप का दास है

34 यीशु ने उन को उत्तर दिया; मैं तुम से सच सच कहता हूँ, कि जो कोई पाप करता है, वह पाप का गुलाम है।

35 और गुलाम सदा घर में नहीं रहता; पुत्र सदा रहता है।

36 सो यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा, तो सचमुच तुम स्वतंत्र हो जाओगे।

### इब्राहीम की संतान?

37 मैं जानता हूँ कि तुम इब्राहीम के वंश

से हो; तौभी मेरा वचन तुम्हारे हृदय में जगह नहीं पाता है। इसलिये तुम मुझे मार डालना चाहते हो।

38 मैं वही कहता हूँ, जो मैंने अपने पिता के पास देखा है; और तुम वही करते रहते हो जो तुमने अपने पिता से सुना है।

39 उन्होंने ने यीशु को उत्तर दिया, कि हमारा पिता तो इब्राहीम है: यीशु ने उन से कहा; यदि तुम इब्राहीम की सन्तान होते, तो इब्राहीम के समान काम करते।

40 परन्तु अब तुम मुझ जैसे मनुष्य को मार डालना चाहते हो, जिस ने तुम्हें वह सत्य वचन बताया जो परमेश्वर से सुना, ऐसा तो इब्राहीम ने नहीं किया था।

41 तुम अपने पिता के समान काम करते हो: उन्होंने ने यीशु से कहा, हम व्यभिचार से नहीं जन्मे; हमारे एक पिता हैं और वो परमेश्वर हैं।

42 यीशु ने उन से कहा; यदि परमेश्वर तुम्हारा पिता होता, तो तुम मुझ से प्रेम रखते; क्योंकि मैं परमेश्वर में से निकल कर आया हूँ; मैं अपने आप से नहीं आया, परन्तु उन्होंने ने मुझे भेजा।

### शैतान की संतान

43 तुम मेरी बात क्यों नहीं समझते? इसलिये कि मेरा वचन सुन नहीं सकते।

44 तुम अपने पिता शैतान से हो, और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो। वह तो आरम्भ से हत्यारा है, और सत्य पर स्थिर न रहा, क्योंकि सत्य उस में है ही नहीं: जब वह झूठ बोलता है, तो अपने स्वभाव ही से बोलता है; क्योंकि वह झूठा है, वरन् झूठ का पिता है।

45 परन्तु मैं जो सच बोलता हूँ, इसी लिये तुम मेरा विश्वास नहीं करते।

### कौन मुझे पापी साबित करेगा?

46 तुम में से कौन मुझे पापी ठहराता है? और यदि मैं सच बोलता हूँ, तो तुम मेरा विश्वास क्यों नहीं करते?

47 जो परमेश्वर से होता है, वह परमेश्वर की बातें सुनता है; और तुम इसलिये नहीं सुनते कि परमेश्वर की ओर से नहीं हो।

### यीशु का निरादर

48 यह सुन यहूदियों ने यीशु से कहा; क्या हम ठीक नहीं कहते, कि आप सामरी हैं, और आप में दुष्टात्मा है?

49 यीशु ने उत्तर दिया, कि मुझ में दुष्टात्मा नहीं; परन्तु मैं अपने पिता का आदर करता हूँ, और तुम मेरा निरादर करते हो।

50 परन्तु मैं अपनी प्रतिष्ठा नहीं चाहता, पर, एक है जो चाहता है, और न्याय करता है।

### इब्राहीम से पहले यीशु हैं, वे अनंत जीवन देते हैं।

51 मैं तुम से सच सच कहता हूँ, कि यदि कोई व्यक्ति मेरे वचन पर चलेगा, तो वह अनन्त काल तक मृत्यु को न देखेगा।

52 यहूदियों ने यीशु से कहा, कि अब हम ने जान लिया कि आप में दुष्टात्मा है: इब्राहीम मर गया, और भविष्यद्वक्ता भी मर गए हैं और आप कहते हैं, कि यदि कोई मेरे वचन पर चलेगा तो वह अनन्त काल तक मृत्यु का स्वाद न चखेगा।

53 हमारे पिता इब्राहीम तो मर गये, क्या आप उन से बड़े हैं? और नबी भी मर गए, आप अपने आप को क्या ठहराते हैं।

54 यीशु ने उत्तर दिया; यदि मैं आप अपनी महिमा करूँ, तो मेरी महिमा कुछ नहीं, परन्तु मेरी महिमा करनेवाले मेरे पिता हैं, जिसे तुम कहते हो, कि वह हमारा परमेश्वर है।

55 और तुम ने तो पिता को नहीं जाना: परन्तु मैं उन्हें जानता हूँ; और यदि कहूँ कि मैं उन्हें नहीं जानता, तो मैं तुम्हारी तरह झूठा ठहरूंगा: परन्तु मैं उन्हें जानता हूँ, और उनके वचन पर चलता हूँ।

56 तुम्हारा पिता इब्राहीम मेरा दिन देखने की आशा से बहुत आनंदित था; और उस ने देखा, और आनंदित हुआ।

57 यहूदियों ने यीशु से कहा, अब तक आप पचास वर्ष के नहीं हुए फिर भी आप ने इब्राहीम को देखा है?

58 यीशु ने उन से कहा; मैं तुम से सच सच कहता हूँ; कि इसके पहिले कि इब्राहीम उत्पन्न हुआ मैं हूँ।

59 तब उन्होंने ने यीशु को मारने के लिये पत्थर उठाए, परन्तु यीशु छिपकर मन्दिर से निकल गये।

### जन्म के अंधे को दृष्टि

**9** फिर जाते हुए यीशु ने एक मनुष्य को देखा, जो जन्म का अन्धा था।

2 और उनके शिष्यों ने उनसे पूछा, हे गुरु, किस ने पाप किया था कि यह अन्धा जन्मा, इस मनुष्य ने, या इसके माता-पिता ने?

3 यीशु ने उत्तर दिया, कि न तो इसने पाप किया था; न इस के माता-पिता ने: परन्तु यह इसलिये हुआ, कि परमेश्वर के काम उस में प्रगट हों।

4 जिस ने मुझे भेजा है; हमें उसके काम दिन ही दिन में करना अवश्य है: वह रात आनेवाली है जिस में कोई काम नहीं कर सकता।

5 जब तक मैं जगत में हूँ, तब तक जगत की ज्योति हूँ।

6 यह कहकर उस ने भूमि पर थूका और उस थूक से मिट्टी सानी, और वह मिट्टी उस अन्धे की आंखों पर लगाकर।

7 उस से कहा; जाओ शीलोह के कुण्ड में धो लो, (जिस का अर्थ भेजा हुआ है) सो उस ने जाकर धोया, और आँखों से देखता हुआ लौट आया।

8 तब पड़ोसी और जिन्होंने ने पहिले उसे भीख मांगते देखा था, कहने लगे; क्या यह वही नहीं, जो बैठा भीख मांगा करता था?

9 कितनों ने कहा, यह वही है: औरों ने कहा, नहीं; परन्तु उसके समान दिखता है: उस ने कहा, मैं वही हूँ।

10 तब वे उस से पूछने लगे, तुम्हारी आंखें कैसे खुल गईं?

11 उस ने उत्तर दिया, कि यीशु नाम एक व्यक्ति ने मिट्टी सानी, और मेरी आंखों पर लगाकर मुझ से कहा, कि शीलोह में जाकर धो ले; सो मैं गया, और धोकर देखने लगा।

12 उन्होंने ने उस से पूछा; यीशु कहां हैं? उस ने कहा; मैं नहीं जानता।

### चमत्कार की छानबीन

13 लोग उसे जो पहिले अन्धा था फरीसियों के पास ले गए।

14 जिस दिन यीशु ने मिट्टी सानकर उस की आंखें खोली थीं वह सब्ब का दिन था।

15 फिर फरीसियों ने भी उस से पूछा; तुम्हारी आंखें किस तरह से खुल गईं? उस ने उन से कहा; उस ने मेरी आंखों पर मिट्टी लगाई, फिर मैं ने धो लिया, और अब देखता हूँ।

16 इस पर कई फरीसी कहने लगे; यह मनुष्य परमेश्वर की ओर से नहीं है क्योंकि वह सब्ब का दिन नहीं मानता। औरों ने कहा, पापी मनुष्य किस तरह ऐसे चिन्ह दिखा सकता है? सो उन में फूट पड़ी।

17 उन्होंने ने उस अन्धे से फिर कहा, उस

ने जो तुम्हारी आंखें खोलीं, तुम उसके विषय में क्या कहते हो? उस ने कहा, वह नबी है।

18 परन्तु यहूदियों को विश्वास न हुआ कि यह अन्धा था और अब देखता है जब तक उन्होंने ने उसके माता-पिता को जिस की आंखें खुल गई थीं, बुलाकर।

19 उन से न पूछा, कि क्या यह तुम्हारा पुत्र है, जिसे तुम कहते हो कि अन्धा जन्मा था? फिर अब वह कैसे देखता है?

20 उसके माता-पिता ने उत्तर दिया; हम तो जानते हैं कि यह हमारा पुत्र है, और अन्धा जन्मा था।

21 परन्तु हम यह नहीं जानते हैं कि अब कैसे देखता है; और न यह जानते हैं, कि किस ने उस की आंखें खोलीं; वह सयाना है; उसी से पूछ लीजिये; वह अपने विषय में आप कह देगा।

22 ये बातें उसके माता-पिता ने इसलिये कहीं क्योंकि वे यहूदियों से डरते थे; क्योंकि यहूदी एका कर चुप थे, कि यदि कोई कहे कि वह मसीह है, तो आराधनालय से निकाला जाए।

23 इसी कारण उसके माता-पिता ने कहा, कि वह सयाना है; उसी से पूछ लो।

24 तब उन्होंने ने उस मनुष्य को जो अन्धा था दूसरी बार बुलाकर उस से कहा, परमेश्वर की स्तुति कर : हम तो जानते हैं कि वह मनुष्य पापी है।

25 उस ने उत्तर दिया: मैं नहीं जानता कि वह पापी है या नहीं : मैं एक बात जानता हूं कि मैं अन्धा था और अब देखता हूं।

26 उन्होंने ने उस से फिर कहा, कि उस ने तुम्हारे साथ क्या किया? और किस तरह तुम्हारी आंखें खोलीं?

27 उस ने उन से कहा; मैं तो तुम से कह चुका, और तुम ने नहीं माना; अब दूसरी बार

क्यों सुनना चाहते हो? क्या तुम भी उनके शिष्य बनना चाहते हो?

28 तब वे उसे बुरा-भला कहकर बोले, तुम ही उसके शिष्य हो; हम तो मूसा के शिष्य हैं।

29 हम जानते हैं कि परमेश्वर ने मूसा से बातें कीं; परन्तु इस मनुष्य को नहीं जानते कि कहां का है।

30 उस ने उन को उत्तर दिया; यह तो आश्चर्य की बात है कि आप नहीं जानते कि कहां का है तौभी उन्होंने ने मेरी आंखें खोल दीं।

31 हम जानते हैं कि परमेश्वर पापियों की नहीं सुनते परन्तु यदि कोई परमेश्वर का भक्त हो, और उन की इच्छा पर चलता हो, तो वे उस की सुनते हैं।

32 जगत के आरम्भ से यह कभी सुनने में नहीं आया, कि किसी ने भी जन्म के अन्धे की आंखें खोली हों।

33 यदि यह व्यक्ति परमेश्वर की ओर से न होता, तो कुछ भी नहीं कर सकता था।

34 उन्होंने ने उस को उत्तर दिया, कि तुम तो बिल्कुल पापों में जन्मे हो, तुम हमें क्या सिखाते हो? और उन्होंने ने उसे बाहर निकाल दिया।

### **आत्मिक अंधापन पाप को न पहचानना है।**

35 यीशु ने सुना, कि उन्होंने ने उसे बाहर निकाल दिया है; और जब उस से भेंट हुई तो कहा, क्या तुम परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करते हो?

36 उस ने उत्तर दिया, कि हे प्रभु ; वह कौन है कि मैं उस पर विश्वास करूं?

37 यीशु ने उस से कहा, तुम ने उन्हें देखा भी है; और जो तुम्हारे साथ बातें कर रहा है वही है।

38 उस ने कहा, हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूँ: और उसे दण्डवत् किया।

39 तब यीशु ने कहा, मैं इस जगत में न्याय के लिये आया हूँ, ताकि जो नहीं देखते वे देखें, और जो देखते हैं वे अन्धे हो जाएं।

40 जो फरीसी उनके साथ थे, उन्होंने ने ये बातें सुन कर यीशु से कहा, क्या हम भी अन्धे हैं?

41 यीशु ने उन से कहा, यदि तुम अन्धे होते तो पापी न ठहरते परन्तु अब कहते हो, कि हम देखते हैं, इसलिये तुम्हारा पाप बना रहता है।

### भेड़शाला और चरवाहा

**10** मैं तुम से सच सच कहता हूँ, कि जो कोई द्वार से भेड़शाला में प्रवेश नहीं करता, परन्तु और किसी तरफ से चढ़ जाता है, वह चोर और डाकू है।

2 परन्तु जो द्वार से भीतर प्रवेश करता है वह भेड़ों का चरवाहा है।

3 उनके लिये द्वारपाल द्वार खोल देता है, और भेड़ें उसका शब्द सुनती हैं, और वह अपनी भेड़ों का नाम ले लेकर बुलाता है और बाहर ले जाता है।

4 और जब वह अपनी सब भेड़ों को बाहर निकाल लाता है, तो उन के आगे आगे लाता है, और भेड़ें उसके पीछे पीछे हो लेती हैं; क्योंकि वे उसका शब्द पहचानती हैं।

5 परन्तु वे पराये के पीछे नहीं जाएंगी, परन्तु उस से भागेंगी, क्योंकि वे परायों का शब्द नहीं पहचानतीं।

6 यीशु ने उन से यह दृष्टान्त कहा, परन्तु वे न समझे कि ये क्या बातें हैं जो वे हम से कहते हैं।

### द्वार मैं हूँ

7 तब यीशु ने उन से फिर कहा, मैं तुम

से सच सच कहता हूँ, कि भेड़ों का द्वार मैं हूँ।

8 जितने मुझ से पहिले आए थे; वे सब चोर और डाकू हैं परन्तु भेड़ों ने उन की न सुनी।

9 द्वार मैं हूँ: यदि कोई मेरे द्वारा भीतर प्रवेश करे तो मोक्ष पाएगा और भीतर बाहर आया जाया करेगा और चारा पाएगा।

10 चोर किसी और काम के लिये नहीं परन्तु केवल चोरी करने और हत्या करने और नष्ट करने को आता है। मैं इसलिए आया कि वे जीवन पाएं, और भरपूर जीवन पायें।

### अच्छा चरवाहा मैं हूँ

11 अच्छा चरवाहा मैं हूँ: अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिये अपनी जान देता है।

12 मज़दूर जो न चरवाहा है, और न भेड़ों का मालिक है, भेड़ों को आते हुए देख, भेड़ों को छोड़कर भाग जाता है, और भेड़िया उन्हें पकड़ता और तित्तर-बित्तर कर देता है।

13 वह इसलिये भाग जाता है क्योंकि वह मज़दूर है, और उस को भेड़ों की चिन्ता नहीं।

### अच्छा चरवाहा अपनी जान देता है

14 अच्छा चरवाहा मैं हूँ; जिस तरह पिता मुझे जानते हैं, और मैं पिता को जानता हूँ।

15 इसी तरह मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ, और मेरी भेड़ें मुझे जानती हैं, और मैं भेड़ों के लिये अपनी जान देता हूँ।

16 मेरी और भी भेड़े हैं, जो इस भेड़शाला की नहीं: मुझे उन को भी अवश्य लाना है, वे मेरा शब्द सुनेंगी; तब एक ही झुण्ड और एक ही चरवाहा होगा।

17 पिता इसलिये मुझ से प्रेम रखते हैं, क्योंकि मैं अपनी जान देता हूँ, कि उसे फिर वापस ले लूं।

18 कोई उसे मुझ से छीनता नहीं, परन्तु मैं उसे आप ही देता हूँ: मुझे उसे देने का भी अधिकार है, और उसे फिर से लेने का भी अधिकार है: यह आज्ञा मेरे पिता से मुझे मिली है।

19 इन बातों के कारण यहूदियों में फिर फूट पड़ी।

20 उन में से बहुत तो कहने लगे, कि यीशु में दुष्टात्मा है, और वे पागल हैं; उनकी क्यों सुनते हो?

21 औरों ने कहा, ये बातें ऐसे मनुष्य की नहीं जिस में दुष्टात्मा हो: क्या दुष्टात्मा अन्धों की आंखें खोल सकती है?

### **यहूदियों का प्रश्न क्या यीशु मसीह है?**

22 यरूशलेम में स्थापन-पर्व हुआ, और जाड़े का मौसम था।

23 और यीशु मन्दिर में सुलैमान के ओसारे में टहल रहे थे।

24 तब यहूदियों ने उन्हें आ घेरा और पूछा, आप हमारे मन को कब तक दुविधा में रखेंगे? यदि आप मसीह हैं, तो हम से साफ कह दें।

25 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, कि मैं ने तुम से कह दिया, और तुम विश्वास करते ही नहीं, जो काम मैं अपने पिता के नाम से करता हूँ, वे ही मेरे गवाह हैं।

26 परन्तु तुम इसलिये विश्वास नहीं करते, क्योंकि मेरी भेड़ों में से नहीं हो।

27 मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूँ, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं।

28 और मैं उन्हें शाश्वत् जीवन देता हूँ, और वे कभी नष्ट न होंगी, और कोई उन्हें मेरे हाथ से नहीं छीनेगा।

29 मेरे पिता, जिन्होंने ने उन्हें मुझ को दिया

है, सर्वोच्च हैं, और कोई उन्हें पिता के हाथ से छीन नहीं सकता।

30 मैं और पिता एक हैं।

### **यीशु को पत्थरवाह करने की कोशिश**

31 यहूदियों ने उन्हें पत्थरवाह करने को फिर पत्थर उठाए।

32 इस पर यीशु ने उन से कहा, कि मैं ने तुम्हें अपने पिता की ओर से बहुत से भले काम दिखाए हैं, उन में से किस काम के लिये तुम मुझे पत्थरवाह करते हो?

33 यहूदियों ने यीशु को उत्तर दिया, कि भले काम के लिये हम आपको पत्थरवाह नहीं करते, परन्तु परमेश्वर की निन्दा करने के कारण और इसलिये कि आप मनुष्य होकर अपने आप को परमेश्वर बनाते हैं।

34 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, क्या तुम्हारी व्यवस्था में नहीं लिखा है कि मैं ने कहा, तुम ईश्वर हो?

35 यदि उस ने उन्हें ईश्वर कहा जिन के पास परमेश्वर का वचन पहुंचा (और पवित्रशास्त्र की बात अटल होती है,)

36 तो जिसे पिता ने पवित्र ठहराकर जगत में भेजा है, तुम उनसे कहते हो कि आप निन्दा करते हैं, इसलिये कि मैं ने कहा, मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ।

37 यदि मैं अपने पिता के काम नहीं करता, तो मेरा विश्वास न करो।

38 परन्तु यदि मैं करता हूँ, तो चाहे मेरा विश्वास न भी करो, परन्तु उन कामों पर तो विश्वास करो, ताकि तुम जानो, और समझो, कि पिता मुझ में हैं, और मैं पिता में हूँ।

39 तब उन्होंने ने फिर यीशु को पकड़ने का प्रयत्न किया परन्तु वह उन के हाथ से निकल गये।

40 फिर वह यरदन के पार उस स्थान पर चले गये, जहाँ योहन्ना पहिले बपतिस्मा दिया करते थे, और वहीं रहे।

41 और बहुतेरे यीशु के पास आकर कहते थे, कि योहन्ना ने तो कोई चमत्कार नहीं दिखाया, परन्तु जो कुछ योहन्ना ने इस के विषय में कहा था, वह सब सच था।

42 और वहाँ बहुतेरों ने यीशु पर विश्वास किया।

### लाज़र की बीमारी और फिर मृत्यु

**11** मरियम और उस की बहिन मार्था के गाँव बैतनिय्याह का लाज़र नाम एक मनुष्य बीमार था।

2 यह वही मरियम थी जिस ने प्रभु पर इत्र डालकर उनके पाँवों को अपने बालों से पोंछा था, उसी का भाई लाज़र बीमार था।

3 तब उस की बहिनों ने यीशु को कहला भेजा, कि हे प्रभु, देखिये, जिस से आप प्रेम रखते हैं, वह बीमार है।

4 यह सुनकर यीशु ने कहा, यह बीमारी मृत्यु की नहीं, परन्तु परमेश्वर की महिमा के लिये है, कि उसके द्वारा परमेश्वर के पुत्र की महिमा हो।

5 और यीशु मार्था और उस की बहिन और लाज़र से प्रेम रखते थे।

6 सो जब यीशु ने सुना, कि वह बीमार है, तो जिस स्थान पर वे थे, वहाँ दो दिन और ठहर गये।

7 फिर उसके बाद यीशु ने शिष्यों से कहा, कि आओ, हम फिर यहूदिया को चलें।

8 शिष्यों ने उनसे कहा, हे गुरु, अभी तो यहूदी आपको पत्थरवाह करना चाहते थे, और क्या आप फिर भी वहाँ जाते हैं?

9 यीशु ने उत्तर दिया, क्या दिन के बारह घंटे नहीं होते? यदि कोई दिन को चले, तो

ठोकर नहीं खाता है क्योंकि इस जगत का प्रकाश देखता है।

10 परन्तु यदि कोई रात को चले, तो ठोकर खाता है, क्योंकि उस में प्रकाश नहीं।

11 यीशु ने ये बातें कहीं, और इस के बाद उन से कहने लगे, कि हमारा मित्र लाज़र सो गया है, परन्तु मैं उसे जगाने जाता हूँ।

12 तब शिष्यों ने उनसे कहा, हे प्रभु, यदि वह सो गया है, तो बच जाएगा।

13 यीशु ने तो उस की मृत्यु के विषय में कहा था: परन्तु वे समझे कि यीशु ने नींद में सो जाने के विषय में कहा।

14 तब यीशु ने उन से साफ कह दिया, कि लाज़र मर गया है।

15 और मैं तुम्हारे कारण आनन्दित हूँ कि मैं वहाँ नहीं था जिस से तुम विश्वास करो, परन्तु अब आओ, हम उसके पास चलें।

16 तब थोमा ने जो दिदुमुस कहलाता है, अपने साथी शिष्यों से कहा, आओ, हम भी उनके साथ मरने को चलें।

### मार्था की यीशु से भेंट

17 सो यीशु को आकर यह मालूम हुआ कि उसे क़ब्र में रखे चार दिन हो चुके हैं।

18 बैतनिय्याह गाँव यरूशलेम के समीप कोई दो मील की दूरी पर था।

19 और बहुत से यहूदी मार्था और मरियम के पास उन के भाई के विषय में शान्ति देने के लिये आए थे।

20 सो मार्था यीशु के आने का समाचार सुनकर उन से भेंट करने को गई, परन्तु मरियम घर में बैठी रही।

21 मार्था ने यीशु से कहा, हे प्रभु, यदि आप यहां होते, तो मेरा भाई निश्चय न मरता।

22 और अब भी मैं जानती हूँ, कि जो कुछ आप परमेश्वर से मांगेंगे, परमेश्वर आपको देंगे।

23 यीशु ने उस से कहा, तुम्हारा भाई जी उठेगा।

24 मार्था ने यीशु से कहा, मैं जानती हूँ, कि अन्तिम दिन में पुनरुत्थान के समय वह जी उठेगा।

### पुनरुत्थान और जीवन मैं हूँ

25 यीशु ने उस से कहा, पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ, जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए, तौभी जीएगा।

26 और जो कोई जीवित है, और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक नहीं मरेगा, क्या तुम यह विश्वास करती हो?

27 उस ने यीशु से कहा, हाँ हे प्रभु, मैं विश्वास कर चुकी हूँ, कि परमेश्वर के पुत्र मसीह जो जगत में आनेवाले थे, वह आप ही हैं।

28 यह कहकर वह चली गई, और अपनी बहिन मरियम को चुपके से बुलाकर कहा, गुरु यहीं हैं, और तुझे बुलाते हैं।

### मरियम की यीशु से भेंट

29 वह सुनते ही मरियम तुरन्त उठकर उनके पास आई।

30 (यीशु अभी गांव में नहीं पहुंचे थे, परन्तु उसी स्थान में थे, जहां मार्था ने उनसे भेंट की थी)।

31 तब जो यहूदी उनके साथ घर में थे, और उसे शान्ति दे रहे थे, यह देखकर कि मरियम तुरन्त उठकर बाहर गई है और यह समझकर कि वह कब्र पर रोने को जाती है, उसके पीछे हो लिए।

32 जब मरियम वहां पहुंची जहां यीशु थे, तो उसे देखते ही उनके पांवों पर गिर कर कहा, हे प्रभु, यदि आप यहां होते तो मेरा भाई न मरता।

33 जब यीशु ने उस को और उन यहूदियों

को जो उनके साथ आए थे रोते हुए देखा, तो आत्मा में बहुत ही उदास हुए, और विचलित होकर कहा, तुम ने उसे कहां रखा है?

34 उन्होंने ने यीशु से कहा, हे प्रभु, चलकर देख लीजिये।

### यीशु रो पड़े

35 यीशु के आंसू बहने लगे।

36 तब यहूदी कहने लगे, देखो, वे उस से कितना प्रेम रखते थे।

37 परन्तु उन में से कितनों ने कहा, क्या ये जिन्होंने अंधों की आंखें खोलीं, यह भी न कर सके कि यह मनुष्य नहीं मरता?

### लाजर का पुनर्जीवित किया जाना

38 यीशु मन में फिर बहुत ही उदास होकर कब्र पर आये, वह एक गुफा थी, और एक पत्थर उस पर धरा था।

39 यीशु ने कहा; पत्थर को हटाओ : तब मरे हुए की बहिन मार्था उनसे कहने लगी, हे प्रभु, उस में से अब तो दुर्गंध आती है क्योंकि उसे मरे चार दिन हो गए।

40 यीशु ने उस से कहा, क्या मैं ने तुझ से नहीं कहा था कि यदि तुम विश्वास करोगी, तो परमेश्वर की महिमा को देखोगी।

41 तब उन्होंने ने उस पत्थर को हटाया, फिर यीशु ने आंखें उठाकर कहा, हे पिता, मैं आपका धन्यवाद करता हूँ कि आप ने मेरी सुन ली है।

42 और मैं जानता था, कि आप सदा मेरी सुनते हैं, परन्तु जो भीड़ आस पास खड़ी है, उन के कारण मैं ने यह कहा, जिस से कि वे विश्वास करें, कि आप ने मुझे भेजा है।

43 यह कहकर यीशु ने बड़े शब्द से पुकारा, 'हे लाजर, निकल आ।'

44 जो मर गया था, वह कफन से हाथ पांव बंधे हुए निकल आया, और उसका मुंह

अंगोछे से लिपटा हुआ था: यीशु ने उन से कहा, उसे खोलकर जाने दो।

45 तब जो यहूदी मरियम के पास आए थे, और उनका यह काम देखा था, उन में से बहुतों ने यीशु पर विश्वास किया।

### **अविश्वासियों और पुरोहितों की यीशु के विरोध में सम्मति**

46 परन्तु उन में से कितनों ने फरीसियों के पास जाकर यीशु के कामों का समाचार दिया।

47 इस पर महापुरोहितों और फरीसियों ने मुख्य सभा के लोगों को इकट्ठा करके कहा, हम करते क्या हैं? यह मनुष्य तो बहुत चमत्कार दिखाता है।

48 यदि हम उसे यों ही छोड़ दें, तो सब उस पर विश्वास ले आएंगे और रोमी आकर हमारी जगह और जाति दोनों पर अधिकार कर लेंगे।

49 तब उन में से काइफा नाम एक व्यक्ति ने जो उस वर्ष का महायाजक था, उन से कहा, तुम कुछ नहीं जानते।

50 और न यह सोचते हो, कि तुम्हारे लिये यह भला है, कि हमारे लोगों के लिये एक मनुष्य मरे, और न यह, कि सारी जाति नाश हो।

51 यह बात उस ने अपनी ओर से नहीं कही, परन्तु उस वर्ष का महापुरोहित होकर भविष्यद्वाणी की, कि यीशु उस जाति के लिये मरेंगे।

52 और न केवल उस जाति के लिये, वरन् इसलिये भी, कि परमेश्वर की तित्तर-बित्तर सन्तानों को एक कर दे।

53 सो उसी दिन से वे यीशु को मार डालने की सम्मति करने लगे।

54 इसलिये यीशु उस समय से यहूदियों में प्रगट होकर नहीं फिरे; परन्तु वहां से जंगल

के निकट के देश में इफ्राईम नाम, एक नगर को चले गये; और अपने शिष्यों के साथ वहीं रहने लगे।

55 और यहूदियों का फसह निकट था, और बहुतेरे लोग फसह से पहिले देहात से यरूशलेम को गए, कि अपने आप को शुद्ध करें।

56 सो वे यीशु को ढूंढने और मन्दिर में खड़े होकर आपस में कहने लगे, कि क्या समझते हो?

57 क्या वे पर्व में नहीं आएंगे? और महापुरोहितों और फरीसियों ने भी आज्ञा दे रखी थी, कि यदि कोई यह जाने कि यीशु कहां है तो बताए, ताकि उन्हें पकड़ लें।

### **मरियम बहुमूल्य इत्र यीशु के पाँव पर डालती है**

**12** फिर यीशु फसह से छः दिन पहिले बैतनिय्याह में आये, जहां लाजर था: जिसे यीशु ने मरे हुआ में से जीवित किया था।

2 वहां उन्होंने ने यीशु के लिये भोजन तैयार किया, और मार्था सेवा कर रही थी, और लाजर उन लोगों में से एक था, जो यीशु के साथ भोजन करने के लिये बैठे थे।

3 तब मरियम ने जटामांसी का आधा सेर बहुमूल्य इत्र लेकर यीशु के पाँवों पर डाला, और अपने बालों से उनके पाँव पोंछे, और इत्र की सुगंध से घर सुगन्धित हो गया।

### **यहूदा ने इत्र डालने का विरोध किया**

4 परन्तु यीशु के शिष्यों में से यहूदा इस्करियोती नाम एक शिष्य जो उन्हें पकड़वाने पर था, कहने लगा।

5 यह इत्र तीन सौ दीनार में बेचकर कंगालों को क्यों नहीं दिया गया?

6 उस ने यह बात इसलिये नहीं कही, कि उसे कंगालों की चिन्ता थी, परन्तु इसलिये कि वह चोर था और उसके पास उनके पैसों की थैली रहती थी, और उस में जो कुछ डाला जाता था, वह उसे निकाल लेता था।

7 यीशु ने कहा, उसे मेरे गाड़े जाने के दिन के लिये रहने दो।

8 क्योंकि कंगाल तो तुम्हारे साथ सदा रहते हैं, परन्तु मैं तुम्हारे साथ सदा न रहूंगा।

9 यहूदियों की एक बड़ी भीड़ जान गई, कि वह वहां है, और वे न केवल यीशु के कारण आए परन्तु इसलिये भी कि लाजर को देखें, जिसे यीशु ने मरे हुआओं में से जीवित किया था।

10 तब महापुरोहितों ने लाजर को भी मार डालने की योजना बनाई।

11 क्योंकि उसके कारण बहुत से यहूदी जाकर, यीशु पर विश्वास करने लगे थे।

### **यरूशलेम में यीशु का विजय प्रवेश**

12 दूसरे दिन बहुत से लोगों ने जो पर्व में आए थे, यह सुनकर, कि यीशु यरूशलेम में आने वाले हैं।

13 खजूर की, डालियां लीं, और उस से भेंट करने को निकले, और पुकारने लगे, “होशाना, धन्य इस्राएल का राजा, और वह जो प्रभु के नाम से आता है।

14 जब यीशु को एक गदहे का बच्चा मिला, तो वे उस पर बैठ गये।

15 जैसा लिखा है, हे सिय्योन की बेटी, मत डर, देख, तुम्हारा राजा गदहे के बच्चे पर चढ़ा हुआ चला आता है।

16 उनके शिष्य, ये बातें पहिले न समझे थे; परन्तु जब यीशु को महिमा प्राप्त हुई, तो उन को स्मरण आया, कि ये बातें यीशु के

विषय में लिखी हुई थीं; और लोगों ने उनसे इस प्रकार का व्यवहार किया था।

### **लोगों की यीशु से भेंट करने की इच्छा**

17 तब भीड़ के लोगों ने जो उस समय यीशु के साथ थे यह गवाही दी कि उन्होंने लाजर को कब्र में से बुलाकर, मरे हुआओं में से जीवित किया है।

18 इसी कारण यीशु से भेंट करने को आए थे क्योंकि उन्होंने ने सुना था, कि उन्होंने यह आश्चर्यकर्म दिखाया है।

19 तब फरीसियों ने आपस में कहा, सोचो तो सही कि तुम से कुछ नहीं बन पड़ता : देखो, संसार उनके पीछे चल पड़ा है।

20 जो लोग उस पर्व में आराधना करने आए थे उन में से कई यूनानी थे।

21 उन्होंने ने गलील के बैतसैदा के रहनेवाले फिलिप्पुस के पास आकर उस से निवेदन किया, कि श्रीमान् हम यीशु से भेंट करना चाहते हैं।

22 फिलिप्पुस ने आकर अन्द्रियास से कहा; तब अन्द्रियास और फिलिप्पुस ने यीशु से कहा।

### **गेहूँ के दाने का उदाहरण**

23 इस पर यीशु ने उन से कहा, वह समय आ गया है, कि मनुष्य के पुत्र की महिमा हो।

24 मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जब तक गेहूँ का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है।

25 जो अपने प्राण को प्रिय जानता है, वह उसे खो देता है; और जो इस जगत में अपने प्राण को अप्रिय जानता है; वह अनन्त जीवन के लिये उस की रक्षा करेगा।

26 यदि कोई मेरी सेवा करे, तो मेरे पीछे

हो ले; और जहां मैं हूँ, वहां मेरा सेवक भी होगा; यदि कोई मेरी सेवा करे, तो पिता उसका आदर करेगा।

### **क्रूस की मृत्यु की ओर उत्सुकता से दृष्टि**

27 अब मेरा जी व्याकुल हो रहा है। इसलिये अब मैं क्या कहूँ? हे पिता, मुझे इस घड़ी से बचा? परन्तु मैं इसी कारण इस घड़ी को पहुंचा हूँ।

28 हे पिता, अपने नाम की महिमा कर: तब यह आकाशवाणी हुई, कि मैं ने उस की महिमा की है, और फिर भी करूंगा।

29 तब जो लोग खड़े हुए सुन रहे थे, उन्होंने ने कहा; कि बादल गरजा, औरों ने कहा, कोई स्वर्गदूत यीशु से बोला।

30 इस पर यीशु ने कहा, यह शब्द मेरे लिये नहीं, परन्तु तुम्हारे लिये आया है।

31 अब इस जगत का न्याय होता है, अब इस जगत का सरदार निकाल दिया जाएगा।

### **ऊँचे पर चढ़ाया जाना क्रूस का संकेत**

32 और मैं यदि पृथ्वी पर से ऊँचे पर चढ़ाया जाऊंगा, तो सब को अपने पास आकर्षित करूंगा।

33 ऐसा कहकर उस ने यह प्रगट कर दिया, कि वह किस तरह की मृत्यु पायेगा।

34 इस पर लोगों ने यीशु से कहा, कि हम ने व्यवस्था की यह बात सुनी है, कि मसीह सर्वदा रहेगा, फिर आप क्यों कहते हैं, कि मनुष्य के पुत्र को ऊँचे पर चढ़ाया जाना अवश्य है?

35 यह मनुष्य का पुत्र कौन है? यीशु ने उन से कहा, ज्योति अब थोड़ी देर तक तुम्हारे बीच में है, जब तक ज्योति तुम्हारे साथ है तब तक चले चलो; ऐसा न हो कि

अन्धकार तुम्हें आ घेरे; जो अन्धकार में चलता है वह नहीं जानता कि किधर जाता है।

36 जब तक ज्योति तुम्हारे साथ है, ज्योति पर विश्वास करो कि तुम ज्योति की सन्तान हो जाओ।” ये बातें कहकर यीशु चले गये और उनसे छिपे रहे।

### **यशायाह नबी का वचन और यहूदियों का अविश्वास**

37 और यीशु ने उन के साम्हने इतने चिन्ह दिखाए, तौभी उन्होंने ने यीशु पर विश्वास न किया।

38 ताकि यशायाह नबी का वचन पूरा हो जो उस ने कहा: हे प्रभु हमारे समाचार का किस ने विश्वास किया है। और प्रभु का भुजबल किस पर प्रगट हुआ?

39 इस कारण वे विश्वास न कर सके, क्योंकि यशायाह ने फिर भी कहा।

40 उस ने उन की आंखें अन्धी, और उन का मन कठोर किया है; कहीं ऐसा न हो, कि वे आंखों से देखें, और मन से समझें, और फिरें, और मैं उन्हें स्वस्थ करूं।

41 यशायाह ने ये बातें इसलिये कहीं, कि उस ने उनकी महिमा देखी; और उस ने उनके विषय में बातें की।

42 तौभी सरदारों में से भी बहुतों ने यीशु पर विश्वास किया, परन्तु फरीसियों के कारण प्रगट में नहीं मानते थे, ऐसा न हो कि आराधनालय में से निकाले जाएं।

43 क्योंकि मनुष्यों की प्रशंसा उन को परमेश्वर की प्रशंसा से अधिक प्रिय लगती थी।

44 यीशु ने पुकारकर कहा, जो मुझ पर विश्वास करता है, वह मुझ पर नहीं परन्तु मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है।

45 और जो मुझे देखता है, वह मेरे भेजनेवाले को देखता है।

46 मैं जगत में ज्योति बनकर आया हूँ, ताकि जो कोई मुझ पर विश्वास करे, वह अन्धकार में न रहे।

### यीशु के वचन का तिरस्कार

47 यदि कोई मेरी बातें सुनकर न माने, तो मैं उसे दोषी नहीं ठहराता, क्योंकि मैं जगत को दोषी ठहराने के लिये नहीं, परन्तु जगत का उद्धार करने के लिये आया हूँ।

48 जो मेरा तिरस्कार करता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उस को दोषी ठहरानेवाला तो एक है: अर्थात् जो वचन मैं ने कहा है, वही आखिर दिन उसे दोषी ठहराएगा।

49 क्योंकि मैं ने अपनी ओर से बातें नहीं कीं, परन्तु पिता जिस ने मुझे भेजा है उन्हीं ने मुझे आज्ञा दी है, कि क्या क्या कहूँ? और क्या क्या बोलूँ?

50 और मैं जानता हूँ, कि उनकी आज्ञा अनन्त जीवन है इसलिये मैं जो बोलता हूँ, वह जैसा पिता ने मुझ से कहा है वैसा ही बोलता हूँ।

### गुरु होकर भी यीशु अपने शिष्यों के पाँव धोते हैं।

**13** फसह के पर्व से पहिले जब यीशु ने जान लिया, कि वह घड़ी आ पहुँची है जब जगत छोड़कर वह पिता के पास जायें, तो उन्होंने

अपने लोगों से, जो जगत में थे, जैसा प्रेम वे रखते थे, अन्त तक वैसा ही प्रेम रखा।

2 और जब शैतान शमौन के पुत्र यहूदा इस्करियोती के मन में यह डाल चुका था, कि यीशु को पकड़वाए, तो भोजन के समय।

3 यीशु ने यह जानकर कि पिता ने सब कुछ उनके हाथ में कर दिया है और वे परमेश्वर के पास से आये हैं, और परमेश्वर के पास जा रहे हैं।

4 भोजन पर से उठकर अपने कपड़े उतारे और अंगोछा लेकर अपनी कमर बाँधी।

5 तब बरतन में पानी भर शिष्यों के पाँव धोने लगे और जिस अंगोछे से अपनी कमर बाँधी थी उसी से पोंछने लगे।

6 जब वह शमौन पतरस के पास आये : तब उस ने यीशु से कहा, हे प्रभु,

7 क्या आप मेरे पाँव धोते हैं? यीशु ने उस को उत्तर दिया, कि जो मैं करता हूँ, तुम अभी नहीं जानते, परन्तु इसके बाद में समझोगे।

8 पतरस ने यीशु से कहा, आप मेरे पाँव कभी न धोने पायेंगे: यह सुनकर यीशु ने उस से कहा, यदि मैं तुझे न धोऊँ, तो मेरे साथ तुम्हारा कुछ भी साझा नहीं।

9 शमौन पतरस ने यीशु से कहा, हे प्रभु तो मेरे पाँव ही नहीं, परन्तु हाथ और सिर भी धो दें।

10 यीशु ने उस से कहा, जो स्नान कर चुका है, उसे पाँव के सिवा और कुछ धोने की आवश्यकता नहीं; परन्तु वह पूर्णतः शुद्ध है: और तुम शुद्ध हो; परन्तु सब के सब नहीं।

11 यीशु तो अपने पकड़वानेवाले को जानते थे इसी कारण यीशु ने कहा, तुम सब के सब शुद्ध नहीं।

### एक दूसरे के पाँव धोना चाहिये

12 जब वे उन के पाँव धो चुके, और अपने कपड़े पहिनकर फिर बैठ गये तो उन से कहने लगे, क्या तुम्हें समझ में आया है कि मैं ने तुम्हारे साथ क्या किया है?

13 तुम मुझे गुरु, और प्रभु कहते हो, और सही कहते हो, क्योंकि मैं वही हूँ।

14 यदि मैं ने प्रभु और गुरु होकर तुम्हारे पाँव धोए हैं; तो तुम्हें भी एक दूसरे के पाँव धोना चाहिए।

15 क्योंकि मैं ने तुम्हें एक आदर्श दिया है, कि जैसे मैं ने तुम्हारे साथ किया है, तुम भी उसी प्रकार किया करो।

16 मैं तुम से सच कहता हूँ, दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं होता और ना ही भेजा हुआ अपने भेजनेवाले से बड़ा होता है।

17 तुम तो ये बातें जानते हो, और यदि उन पर चलो, तो धन्य हो।

18 मैं तुम सब के विषय में नहीं कहता: जिन्हें मैं ने चुन लिया है, उन्हें मैं जानता हूँ: परन्तु यह इसलिये है, कि पवित्रशास्त्र का यह वचन पूरा हो, कि जो मेरी रोटी खाता है, उस ने मुझ पर लात उठाई है।

19 अब मैं उनके होने से पहिले तुम्हें जताए देता हूँ कि जब हो जाए तो तुम विश्वास करो कि मैं वही हूँ।

20 मैं तुम से सच सच कहता हूँ, कि जो मेरे द्वारा भेजे हुए को ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है; और जो मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है।

### **यीशु का अपना शिष्य उन्हें पकड़वायेगा**

21 ये बातें कहकर यीशु आत्मा में व्याकुल हुए और यह गवाही दी, कि मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा।

22 शिष्य यह सदेह करते हुए, कि वह किस के विषय में कहते हैं, एक दूसरे की ओर देखने लगे।

23 उनके शिष्यों में से एक जिस से यीशु प्रेम रखते थे, यीशु की छाती की ओर झुका हुआ बैठा था।

24 तब शमौन पतरस ने उस शिष्य की ओर इशारा करके पूछा, कि पूछो, वह किस के विषय में कहते हैं?

25 तब उस ने उसी तरह यीशु की छाती की ओर झुक कर पूछा, हे प्रभु, वह कौन है? यीशु ने उत्तर दिया, जिसे मैं यह रोटी का टुकड़ा डुबोकर देता हूँ, वही है।

26 और उस ने टुकड़ा डुबोकर शमौन के पुत्र यहूदा इस्करियोती को दिया।

27 और टुकड़ा लेते ही शैतान उस में समा गया: तब यीशु ने उस से कहा, जो तुम करते हो, तुरन्त करो।

28 परन्तु बैठनेवालों में से किसी ने नहीं जाना कि उस ने यह बात उस से किस लिये कही।

29 यहूदा के पास थैली रहती थी, इसलिये किसी ने समझा, कि यीशु उस से कहते हैं, कि जो कुछ हमें पर्व के लिये चाहिए वह मोल ले आओ, या यह कि कंगालों को कुछ दे दो।

30 तब वह टुकड़ा लेकर तुरन्त बाहर चला गया, और रात्रि का समय था।

31 जब वह बाहर चला गया तो यीशु ने कहा; अब मनुष्य के पुत्र की महिमा हुई, और परमेश्वर की महिमा उस में हुई।

32 और परमेश्वर भी अपने में पुत्र की महिमा करेंगे, वरन् तुरन्त करेंगे।

33 हे बालको, मैं और थोड़ी देर तुम्हारे पास हूँ: फिर तुम मुझे ढूँढ़ोगे, और जैसा मैं ने यहूदियों से कहा, कि “जहां मैं जाता हूँ, वहां तुम नहीं आ सकते” वैसा ही मैं अब तुम से भी कहता हूँ।

### **प्रेम की नई आज्ञा**

34 मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ, कि एक दूसरे से प्रेम रखो: जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो।

35 यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे, कि तुम मेरे शिष्य हो।

### **पतरस का तीन बार इन्कार करना**

36 शमौन पतरस ने यीशु से कहा, हे प्रभु, आप कहां जाते हैं? यीशु ने उत्तर दिया, कि जहां मैं जाता हूँ, वहां तुम अब मेरे पीछे आ नहीं सकते! परन्तु इस के बाद मेरे पीछे आओगे।

37 पतरस ने यीशु से कहा, हे प्रभु अभी मैं आपके पीछे क्यों नहीं आ सकता? मैं तो आपके लिये अपना प्राण भी दे दूंगा।

38 यीशु ने उत्तर दिया, क्या तुम मेरे लिये अपना प्राण दोगे? मैं तुझ से सच सच कहता हूँ कि मुर्ग तब तक बाँग न देगा जब तक कि तुम तीन बार मेरा इनकार न कर लोगे।

### स्वर्ग में निवास स्थान

**14** तुम्हारा मन बेचैन न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी विश्वास रखो।

2 मेरे पिता के घर में बहुत से निवास के स्थान हैं, यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूँ।

3 और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूँ, तो फिर आकर तुम्हें अपने साथ ले जाऊँगा, कि जहाँ मैं रहूँ वहाँ तुम भी रहो।

4 और जहाँ मैं जाता हूँ तुम वहाँ का मार्ग जानते हो।

5 थोमा ने यीशु से कहा, हे प्रभु, हम नहीं जानते कि आप कहाँ जाते हैं? तो मार्ग कैसे जानेंगे?

### मार्ग सत्य और जीवन मैं हूँ

6 यीशु ने उस से कहा, मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता।

7 यदि तुम ने मुझे जाना होता, तो मेरे पिता को भी जानते, और अब उन्हें जानते हो, और उन्हें देखा भी है।

8 फिलिपुस ने यीशु से कहा, हे प्रभु, पिता को हमें दिखा दें: यही हमारे लिये पर्याप्त है।

### मैं पिता में और पिता मुझ में

9 यीशु ने उस से कहा; हे फिलिपुस, मैं इतने दिन से तुम्हारे साथ हूँ, और क्या तुम मुझे नहीं जानते हो? जिस ने मुझे देखा है उस ने पिता को देखा है: तुम क्यों कहते हो कि पिता को हमें दिखायें।

10 क्या तुम विश्वास नहीं करते, कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में है? ये बातें जो मैं तुम से कहता हूँ, अपनी ओर से नहीं कहता, परन्तु पिता मुझ में रहकर अपने काम करते हैं।

11 मेरी इस बात का विश्वास करो, कि मैं पिता में हूँ; और पिता मुझ में है; नहीं तो मेरे कामों ही के कारण मेरा विश्वास करो।

12 मैं तुम से सच सच कहता हूँ, कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूँ वह भी करेगा, वरन् इन से भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ।

### मेरे नाम से माँगो

13 और जो कुछ तुम मेरे नाम से माँगोगे, वही मैं करूँगा कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो।

14 यदि तुम मुझ से मेरे नाम से कुछ भी माँगोगे, तो मैं उसे करूँगा।

15 यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।

### पवित्र आत्मा की सहायता

16 और मैं पिता से निवेदन करूँगा, और वे तुम्हें एक और सहायक देंगे, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे।

17 अर्थात् सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है: तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा।

18 मैं तुम्हें अनाथ न छोड़ूँगा, मैं तुम्हारे पास आऊँगा।

### मैं जीवित हूँ इस कारण तुम भी जीवित रहोगे

19 और थोड़ी सी देर है कि संसार फिर मुझे न देखेगा, परन्तु तुम मुझे देखोगे, क्योंकि मैं जीवित हूँ, तुम भी जीवित रहोगे।

20 उस दिन तुम जानोगे, कि मैं अपने पिता में हूँ, और तुम मुझ में, और मैं तुम में।

21 जिस के पास मेरी आज्ञा है, और वह उनका पालन करता है, वही मुझ से प्रेम रखता है, और जो मुझ से प्रेम रखता है, उस से मेरे पिता प्रेम रखेंगे, और मैं उस से प्रेम रखूंगा, और अपने आप को उस पर प्रगट करूंगा।

### विश्वास करने वालों पर यीशु प्रगट होंगे

22 उस यहूदा ने जो इस्करियोती न था, उस से कहा, हे प्रभु, ऐसा क्यों कि आप अपने आप को हम पर प्रगट करना चाहते हैं, और संसार पर नहीं।

23 यीशु ने उस को उत्तर दिया, यदि कोई मुझ से प्रेम रखे, तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उस से प्रेम रखेगा, और हम उनके पास आएंगे, और उनके साथ निवास करेंगे।

24 जो मुझ से प्रेम नहीं रखता, वह मेरे वचन नहीं मानता है, और जो वचन तुम सुनते हो, वह मेरा नहीं परन्तु पिता का है, जिन्होंने मुझे भेजा है।

25 ये बातें मैं ने तुम्हारे साथ रहते हुए तुम से कहीं हैं।

26 परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेंगे, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।

### अपनी शांति तुम्हें देता हूँ

27 मैं तुम्हें शांति दिए जाता हूँ, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूँ; जैसे संसार देता है वैसी मैं तुम्हें नहीं देता: तुम्हारा मन न घबराए और न डरे।

28 तुम ने सुना, जो मैं ने कहा, कि मैं जाता हूँ, और तुम्हारे पास फिर आता हूँ: यदि तुम मुझ से प्रेम रखते, तो इस बात से

आनन्दित होते, कि मैं पिता के पास जाता हूँ क्योंकि मेरा पिता मुझ से बड़ा है।

29 और मैं ने अब इस के होने से पहिले तुम से कह दिया है, कि जब ऐसा हो, तो तुम विश्वास करो।

### संसार का सरदार

30 मैं अब तुमसे और अधिक बातें न करूंगा, क्योंकि इस संसार का सरदार आता है, और मुझ में उसका कुछ नहीं।

31 परन्तु यह इसलिये कि संसार जाने कि मैं पिता से प्रेम रखता हूँ, और जिस तरह पिता ने मुझे आज्ञा दी है, मैं वैसे ही करता हूँ: उठो, हम यहां से चलें।

### सच्ची दाखलता यीशु हैं।

**15** सच्ची दाखलता मैं हूँ; और मेरे पिता किसान हैं।

2 जो डाली मुझ में है, और नहीं फलती, उसे वे काट देते हैं, और जो फलती है, उसे वे छांटते हैं ताकि और फले।

3 तुम तो उस वचन के कारण जो मैं ने तुम से कहा है, शुद्ध हो।

4 तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में: जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहोगे तो नहीं फल सकते।

### मुझसे अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते

5 मैं दाखलता हूँ: तुम डालियां हो; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उस में, वह बहुत फल लाता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।

6 यदि कोई मुझ में बना न रहे, तो वह डाली की नाई फेंक दिया जाता है और सूख जाता है; और लोग उसे बटोरकर आग में झोंक देते हैं, और वे जल जाती हैं।

7 यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरी बातें

तुम में बनी रहें तो जो चाहो मांगो और वह तुम्हारे लिये पूरा होगा।

8 मेरे पिता की महिमा इसी से होती है, कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे शिष्य ठहरोगे।

### मेरे प्रेम में बने रहो

9 जैसे पिता ने मुझ से प्रेम रखा, वैसे ही मैं ने तुम से प्रेम रखा है, मेरे प्रेम में बने रहो।

10 यदि तुम मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे: जैसा कि मैं ने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उनके प्रेम में बना रहता हूँ।

11 मैं ने ये बातें तुम से इसलिये कही हैं, कि मेरा आनन्द तुम में बना रहे, और तुम्हारा आनन्द पूर्ण हो जाए।

12 मेरी आज्ञा यह है, कि जैसे मैं ने तुम से प्रेम किया, वैसे ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो।

### मित्रों के लिये प्राण देना

13 इस से बड़ा प्रेम किसी का नहीं जो कि अपने मित्रों के लिये अपना प्राण देता है।

14 जो कुछ मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ, यदि उसका पालन करो, तो तुम मेरे मित्र हो।

15 अब से मैं तुम्हें दास न कहूँगा, क्योंकि दास नहीं जानता, कि उसका स्वामी क्या करता है: परन्तु मैंने तुम्हें मित्र कहा है, क्योंकि मैं ने जो भी बातें अपने पिता से सुनीं, वे सब तुम्हें बता दीं।

### मैंने तुम्हें चुना है।

16 तुम ने मुझे नहीं चुना परन्तु मैं ने तुम्हें चुना है और तुम्हें ठहराया ताकि तुम जाकर फल लाओ; और तुम्हारा फल बना रहे, ताकि तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से मांगो वह तुम्हें दें।

17 इन बातों की आज्ञा मैं तुम्हें इसलिये देता हूँ, कि तुम एक दूसरे से प्रेम रखो।

18 यदि संसार तुम से बैर रखता है, तो तुम जानते हो, कि उस ने तुम से पहिले मुझ से भी बैर रखा।

19 यदि तुम संसार के होते, तो संसार अपनों से प्रेम रखता, परन्तु क्योंकि तुम संसार के नहीं हो परन्तु मैं ने तुम्हें संसार में से चुन लिया है इसी लिये संसार तुम से बैर रखता है।

20 स्मरण करो जो मैं ने तुम से कहा था, कि दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं होता, यदि उन्होंने ने मुझे सताया, तो तुम्हें भी सताएंगे; यदि उन्होंने ने मेरी बात मानी, तो तुम्हारी भी मानेंगे।

21 परन्तु यह सब कुछ वे मेरे नाम के कारण तुम्हारे साथ करेंगे क्योंकि वे मेरे भेजनेवाले को नहीं जानते।

22 यदि मैं न आता और उन से बातें न करता, तो वे पापी न ठहरते परन्तु अब उन्हें उन के पाप के लिये कोई बहाना नहीं।

23 जो मुझ से बैर रखता है, वह मेरे पिता से भी बैर रखता है।

24 यदि मैं उन में वो काम न करता, जो और किसी ने नहीं किए तो वे पापी नहीं ठहरते, परन्तु अब तो उन्होंने ने मुझे और मेरे पिता दोनों को देखा है और दोनों से बैर किया है।

25 और यह इसलिये हुआ, कि वह वचन पूरा हो, जो उन की व्यवस्था में लिखा है, “कि उन्होंने ने मुझ से अकारण बैर किया।

26 परन्तु जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूँगा, अर्थात् सत्य का आत्मा जो पिता से निकलता है, वह मेरी गवाही देगा।

27 और तुम भी मेरे गवाह हो क्योंकि तुम आरम्भ से मेरे साथ रहे हो।

### तुम्हारा विरोध होगा

**16** ये बातें मैं ने तुम से इसलिये कहीं हैं, कि तुम ठोकर न खाओ।

2 वे तुम्हें आराधनालयों में से निकाल देंगे,

और वह समय आता है, कि जो कोई तुम्हें मार डालेगा वह समझेगा कि मैं परमेश्वर की सेवा करता हूँ।

3 और यह वे इस कारण करेंगे कि उन्होंने ने न तो पिता को जाना है और न मुझे जानते हैं।

4 परन्तु ये बातें मैं ने इसलिये तुम से कही, हैं कि जब उन का समय आए तो तुम्हें स्मरण आ जाए, कि मैं ने तुम से पहिले ही यह कह दिया था। मैं ने आरम्भ में तुम से ये बातें इसलिये नहीं कही क्योंकि मैं तुम्हारे साथ था।

5 अब मैं अपने भेजनेवाले के पास जाता हूँ और तुम में से कोई मुझ से नहीं पूछता, कि आप कहाँ जाते हैं?

6 परन्तु मैं ने जो ये बातें तुम से कही हैं, इस कारण तुम्हारा मन शोक से भर गया।

### **पवित्र आत्मा का संसार में कार्य**

7 तौभी मैं तुम से सच कहता हूँ, कि मेरा जाना तुम्हारे लिये अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊँ, तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा, परन्तु यदि मैं जाऊँगा, तो सहायक तुम्हारे पास भेज दूँगा।

8 और वह आकर संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में कायल करेगा।

9 पाप के विषय में इसलिये कि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते।

10 और धार्मिकता के विषय में इसलिये कि मैं पिता के पास जाता हूँ,

11 और तुम मुझे फिर न देखोगे : न्याय के विषय में इसलिये कि संसार का सरदार दोषी ठहराया गया है।

12 मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते।

13 परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें हर सत्य का मार्ग बताएगा,

क्योंकि वह अपनी ओर से नहीं कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा।

14 वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।

15 जो कुछ पिता का है, वह सब मेरा है; इसलिये मैं ने कहा, कि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।

### **शोक और फिर आनंद**

16 थोड़ी देर में तुम मुझे नहीं देखोगे, और फिर थोड़ी देर बाद मुझे फिर देखोगे।

17 तब उनके कुछ शिष्यों ने आपस में कहा, यह कैसी बात है, जो यीशु हम से कहते हैं, कि थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे, और फिर थोड़ी देर के बाद मुझे देखोगे? और यह इसलिये कि मैं पिता के पास जाता हूँ?

18 तब उन्होंने ने कहा, यह थोड़ी देर जो वे कहते हैं, क्या बात है? हम नहीं जानते, कि क्या कहते हैं।

19 यीशु ने यह जानकर, कि वे मुझ से पूछना चाहते हैं, उन से कहा, क्या तुम आपस में मेरी इस बात के विषय में पूछ ताछ करते हो, कि थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे, और फिर थोड़ी देर में मुझे देखोगे?

20 मैं तुम से सच सच कहता हूँ ; कि तुम रोओगे और विलाप करोगे, परन्तु संसार आनन्द करेगा: तुम्हें शोक होगा परन्तु तुम्हारा शोक आनन्द में बदल जाएगा।

21 जब स्त्री जनने लगती है तो उस को शोक होता है, क्योंकि उस के दुःख की घड़ी आ पहुँची, परन्तु जब वह बालक जन्म चुकी तो इस आनन्द से कि जगत में एक मनुष्य उत्पन्न हुआ है, उस संकट को फिर स्मरण नहीं करती है।

22 और तुम्हें भी अब तो शोक है, परन्तु मैं तुम से फिर मिलूँगा और तुम्हारे मन में आनन्द होगा; और तुम्हारा आनन्द कोई तुम से छीन न सकेगा।

### मेरे नाम से माँगो

23 उस दिन तुम मुझ से कुछ न पूछोगे : मैं तुम से सच सच कहता हूँ, यदि पिता से कुछ माँगोगे, तो वह मेरे नाम से तुम्हें देगा।

24 अब तक तुम ने मेरे नाम से कुछ नहीं मांगा; मांगो तो पाओगे ताकि तुम्हारा आनन्द पूर्ण हो जाए।

25 मैं ने ये बातें तुम से दृष्टान्तों में कही हैं, परन्तु वह समय आता है, कि मैं तुम से दृष्टान्तों में और बात नहीं करूँगा, परन्तु खुलकर तुम्हें पिता के विषय में बताऊँगा।

26 उस दिन तुम मेरे नाम से माँगोगे, और मैं तुम से यह नहीं कहता, कि मैं तुम्हारे लिये पिता से निवेदन करूँगा।

27 क्योंकि पिता तो आप ही तुम से प्रेम रखते हैं, इसलिये कि तुम ने मुझ से प्रेम किया है, और यह भी विश्वास किया है, कि मैं पिता की ओर से निकल कर आया हूँ।

28 मैं पिता से निकलकर जगत में आया हूँ, फिर जगत को छोड़कर पिता के पास जाता हूँ।

29 उनके शिष्यों ने कहा, देखो, अब तो आप खुलकर कहते हैं, और कोई दृष्टान्त में नहीं कहते।

30 अब हम जान गए हैं, कि आप सब कुछ जानते हैं, और आपको प्रयोजन नहीं, कि कोई आपसे सवाल करे, इस से हम विश्वास करते हैं, कि आप परमेश्वर से निकले हैं।

31 यह सुन यीशु ने उन से कहा, क्या तुम अब विश्वास करते हो?

### मैंने संसार को जीत लिया है।

32 देखो, वह घड़ी आती है और आ पहुँची है कि तुम सब तित्तर-बित्तर होकर अपना अपना मार्ग लोगे, और मुझे अकेला छोड़ दोगे, तौभी मैं अकेला नहीं क्योंकि पिता मेरे साथ हैं।

33 मैं ने ये बातें तुम से इसलिये कही हैं, कि तुम्हें मुझ में शान्ति मिले; संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु दाढ़स बांधो, मैं ने संसार को जीत लिया है।

### यीशु की स्वयं की प्रार्थना

**17** यीशु ने ये बातें कहीं और अपनी आंखें आकाश की ओर उठाकर कहा, हे पिता, वह घड़ी आ पहुँची है, अपने पुत्र की महिमा करें, कि पुत्र भी आपकी महिमा करे।

2 क्योंकि आप ने उन्हें सब प्राणियों पर अधिकार दिया, ताकि जिन्हें आप ने उन को दिया है, उन सब को वे शाश्वत् जीवन दें।

### शाश्वत् जीवन यह है

3 और शाश्वत् जीवन यह है, कि वे आप अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे आप ने भेजा है, जानें।

4 जो कार्य आप ने मुझे करने को दिया था, उसे पूर्ण करके मैं ने जगत में आपकी महिमा की है।

5 और अब, हे पिता, आप अपने साथ मेरी महिमा उस महिमा से करें जो जगत के अस्तित्व से पहिले, मेरी आपके साथ थी।

### शिष्यों के लिये प्रार्थना

6 मैं ने आपका नाम उन मनुष्यों पर प्रगट किया जिन्हें आप ने जगत में से मुझे दिये : वे आपके थे और आप ने उन्हें मुझे दिये हैं और उन्होंने ने आपके वचन को मान लिया है।

7 अब वे जान गए हैं, कि जो कुछ आप ने मुझे दिया है, सब आपकी ओर से है।

8 क्योंकि जो बातें आप ने मुझे पहुँचाई, मैं ने उन्हें उन तक पहुँचा दी हैं और उन्होंने ने उन को ग्रहण किया है और सच सच जान लिया है, कि मैं आपकी ओर से निकला हूँ, और विश्वास कर लिया है कि आप ही ने मुझे भेजा है।

9 मैं उन के लिये निवेदन करता हूँ संसार के लिये नहीं परन्तु उन्हीं के लिये जिन्हें आप ने मुझे दिये हैं, क्योंकि वे आपके हैं।

10 और जो कुछ मेरा है वह सब आपका है; और जो आपका है, वह मेरा है; और इन से मेरी महिमा प्रगट हुई है।

### मेरे नाम से इनकी रक्षा हो

11 मैं इसके बाद जगत में न रहूंगा, परन्तु ये जगत में रहेंगे, और मैं आपके पास आता हूँ; हे पवित्र पिता, अपने उस नाम से जो आप ने मुझे दिया है, इन की रक्षा करें, कि वे हमारी तरह एक हों।

12 जब मैं उन के साथ था, तो मैं ने आपके उस नाम से, जो आप ने मुझे दिया है, उन की रक्षा की, मैं ने उन की रखवाली की और विनाश के पुत्र को छोड़ उन में से कोई नष्ट न हुआ, इसलिये कि पवित्रशास्त्र की बात पूर्ण हो।

13 परन्तु अब मैं आपके पास आता हूँ, और ये बातें जगत में कहता हूँ, कि वे मेरा आनन्द अपने में परिपूर्ण पाएं।

14 मैं ने आपका वचन उन्हें पहुंचा दिया है, और संसार ने उन से बैर किया है, क्योंकि जैसा मैं संसार का नहीं हूँ वैसे ही वे भी संसार के नहीं हैं।

15 मैं यह निवेदन नहीं करता, कि आप उन्हें जगत से उठा लें, परन्तु यह कि आप उन्हें उस दुष्ट से बचाए रखें।

### ये संसार के नहीं हैं

16 जैसे मैं संसार का नहीं हूँ, वैसे ही वे भी संसार के नहीं हैं।

17 सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र करें: आपका वचन सत्य है।

18 जैसे आप ने जगत में मुझे भेजा, वैसे ही मैं ने भी उन्हें जगत में भेजा है।

19 और उन के लिये मैं अपने आप को पवित्र करता हूँ ताकि वे भी सत्य के द्वारा पवित्र किए जाएं।

### विश्वासियों के लिये प्रार्थना में उनमें और आप मुझ में

20 मैं केवल इन्हीं के लिये निवेदन नहीं करता, परन्तु उन के लिये भी जो इन के वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब भी एक हों।

21 जैसे आप हे पिता मुझ में है, और मैं आप में हूँ, वैसे ही वे भी हम में एक हों, इसलिये कि जगत विश्वास करे, कि आप ही ने मुझे भेजा है।

22 और वह महिमा जो आप ने मुझे दी, मैं ने उन्हें दी है कि वे वैसे ही एक हों जैसे कि हम एक हैं।

23 मैं उन में और आप मुझ में कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएं, और जगत जाने कि आप ही ने मुझे भेजा है, और जैसा आप ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही उन से प्रेम रखा है।

24 हे पिता, मैं चाहता हूँ कि जिन्हें आप ने मुझे दिया है, जहां मैं हूँ वहां वे भी मेरे साथ हों कि वे मेरी उस महिमा को देखें जो आप ने मुझे दी है, क्योंकि आप ने जगत की उत्पत्ति से पहिले मुझ से प्रेम रखा है।

25 हे धर्मी पिता, संसार ने मुझे नहीं जाना है, परन्तु मैं ने आपको जाना और इन्होंने ने भी जाना है कि आप ही ने मुझे भेजा है।

26 और मैं ने आपका नाम उन को बताया और बताता रहूंगा कि जो प्रेम आप को मुझ से था, वह उन में रहे और मैं उन में रहूँ।

### रात को बाग में यीशु का पकड़वाया जाना

**18** यीशु ये बातें कहकर अपने शिष्यों के साथ किद्रोन के नाले के पार गये, वहां एक बाग था, जिस में वे और उनके शिष्य गए।

2 और यीशु का पकड़वानेवाला यहूदा भी

वह जगह जानता था, क्योंकि यीशु अपने शिष्यों के साथ वहां जाया करते थे।

3 तब यहूदा पलटन को और महापुरोहितों और फरीसियों की ओर से सिपाहियों को लेकर बत्तियाँ और मशालों और हथियारों को लिए हुए वहां आया।

4 तब यीशु उन सब बातों को जो उन पर आनेवाली थीं, जानकर निकले, और उन से कहने लगे, किसे ढूंढते हो?

5 उन्होंने ने उत्तर दिया, यीशु नासरी को : यीशु ने उन से कहा, मैं ही हूँ और उनका पकड़वानेवाला यहूदा भी उन के साथ खड़ा था।

6 उनके यह कहते ही, कि मैं ही हूँ, वे पीछे हटकर भूमि पर गिर पड़े।

7 तब यीशु ने फिर उन से पूछा, तुम किसे ढूंढते हो।

8 वे बोले, यीशु नासरी को। यीशु ने उत्तर दिया, मैं तो तुम से कह चुका हूँ कि मैं ही हूँ, यदि मुझे ढूंढते हो तो इन्हें जाने दो।

9 यह इसलिये हुआ, कि वह वचन पूरा हो, जो यीशु ने कहा था कि जिन्हें पिता ने मुझे दिया है उन में से मैं ने एक को भी न खोया।

#### **पतरस का तलवार चलाना**

10 शमौन पतरस ने तलवार, जो उसके पास थी, खींची और महापुरोहित के सेवक पर चलाकर, उसका दहिना कान उड़ा दिया, उस सेवक का नाम मलखुस था।

11 तब यीशु ने पतरस से कहा, अपनी तलवार काठी में रख: जो कटोरा पिता ने मुझे दिया है क्या मैं उसे न पीऊँ?

#### **हन्ना के सामने यीशु का लाया जाना**

12 तब सिपाहियों और उन के सूबेदार और यहूदियों के प्यादों ने यीशु को पकड़कर बाँध लिया।

13 और पहिले यीशु को हन्ना के पास ले गये क्योंकि वह उस वर्ष के महापुरोहित

काइफा का ससुर था।

14 यह वही काइफा था, जिस ने यहूदियों को सलाह दी थी कि हमारे लोगों के लिये एक पुरुष का मरना अच्छा है।

#### **पतरस का इन्कार करना**

15 शमौन पतरस और एक और शिष्य भी यीशु के पीछे चल पड़े: यह शिष्य महापुरोहित का जाना-पहचाना था और यीशु के साथ महापुरोहित के आंगन में गया।

16 परन्तु पतरस बाहर द्वार पर खड़ा रहा, तब वह दूसरा शिष्य जो महापुरोहित का जानकार था, बाहर निकला, और द्वारपालिन से कहकर, पतरस को भीतर ले आया।

17 उस दासी ने जो द्वारपालिन थी, पतरस से कहा, क्या तुम भी इस मनुष्य के शिष्यों में से हो? उस ने कहा नहीं, मैं नहीं हूँ।

18 दास और सिपाही जाड़े के कारण कोयले सुलगाकर खड़े हुये ताप रहे थे और पतरस भी उन के साथ ताप रहा था।

#### **महापुरोहित की पूछताछ और यीशु पर हमला**

19 तब महापुरोहित ने यीशु से उनके शिष्यों के विषय में और उनके उपदेश के विषय में पूछा।

20 यीशु ने उस को उत्तर दिया, कि मैं ने जगत से खुलकर बातें की है मैं ने सभाओं और आराधनालय में जहां सब यहूदी इकट्ठे हुआ करते हैं सदा उपदेश दिया और गुप्त में कुछ भी नहीं कहा।

21 तुम मुझ से क्यों पूछते हो? सुननेवालों से पूछो कि मैं ने उन से क्या कहा? देखो, वे जानते हैं कि मैं ने क्या क्या कहा है।

22 जब यीशु ने यह कहा, तो सिपाहियों में से एक ने जो पास खड़ा था, यीशु को थप्पड़ मारकर कहा, क्या तुम महापुरोहित को इस प्रकार उत्तर देते हो।

23 यीशु ने उसे उत्तर दिया, यदि मैं ने बुरा

कहा, तो उस बुराई पर गवाही दो; परन्तु यदि भला कहा, तो मुझे क्यों मारते हो?

24 हन्ना ने उसे बन्धे हुए काइफा महापुरोहित के पास भेज दिया।

25 शमौन पतरस खड़ा हुआ ताप रहा था। तब उन्होंने ने उस से कहा; क्या तुम भी उनके शिष्यों में से हो? उस ने इन्कार करके कहा नहीं, मैं नहीं हूँ।

26 महापुरोहित के दासों में से एक जो उनके कुटुम्ब में से था, जिसका कान पतरस ने काट डाला था, बोला, क्या मैं ने तुझे यीशु के साथ बाग में नहीं देखा था?

27 पतरस फिर इन्कार कर गया और तुरन्त मुर्ग ने बांग दी।

### यीशु पीलातुस के किले में

28 और वे यीशु को काइफा के पास से किले को ले गये और भोर का समय था, परन्तु वे आप किले के भीतर न गये ताकि अशुद्ध न हों परन्तु फसह खा सकें।

29 तब पिलातुस उन के पास बाहर निकल कर आया और कहा, तुम इस मनुष्य पर किस बात की नालिश करते हो?

30 उन्होंने ने उस को उत्तर दिया, कि यदि वह कुकर्म न होता तो हम उसे आपके हाथ न सौंपते।

31 पिलातुस ने उन से कहा, तुम ही इसे ले जाकर अपने नियमों के अनुसार उसका न्याय करो: यहूदियों ने उससे कहा, हमें अधिकार नहीं कि किसी को मृत्युदंड दें।

32 यह इसलिये हुआ, कि यीशु की वह बात पूरी हो जो उन्होंने संकेत देते हुए कही थी, कि उनका मरना कैसा होगा।

33 तब पिलातुस फिर किले के भीतर गया और यीशु को बुलाकर, उन से पूछा, क्या तुम यहूदियों के राजा हो?

34 यीशु ने उत्तर दिया; क्या तुम यह बात अपनी ओर से कहते हो या औरों ने मेरे विषय में तुझ से कही?

35 पिलातुस ने उत्तर दिया, क्या मैं यहूदी हूँ? तुम्हारी ही जाति और महापुरोहितों ने तुझे मेरे हाथ सौंपा है, तुम ने क्या किया है?

### मेरा राज्य इस जगत का नहीं

36 यीशु ने उत्तर दिया, कि मेरा राज्य इस जगत का नहीं, यदि मेरा राज्य इस जगत का होता, तो मेरे सेवक लड़ते, कि मैं यहूदियों के हाथ सौंपा न जाता: परन्तु मेरा राज्य यहां का नहीं है।

37 पिलातुस ने यीशु से कहा, तो क्या तुम राजा हो? यीशु ने उत्तर दिया, कि तुम सच कहते हो, क्योंकि मैं राजा हूँ; मैं ने इसलिये जन्म लिया, और इसलिये जगत में आया हूँ कि सत्य की गवाही दूं जो कोई सत्य का है, वह मेरा शब्द सुनता है।

38 पिलातुस ने यीशु से कहा, सत्य क्या है? और यह कहकर वह फिर यहूदियों के पास निकल गया और उन से कहा, मैं तो उस में कुछ दोष नहीं पाता हूँ।

### निर्दोष यीशु को मृत्युदंड और बरअब्बा डाकू का रिहा होना

39 पर तुम्हारी यह रीति है कि मैं फसह में तुम्हारे लिये एक व्यक्ति को छोड़ दूं सो क्या तुम चाहते हो, कि मैं तुम्हारे लिये यहूदियों के राजा को छोड़ दूं?

40 तब उन्होंने ने फिर चिल्लाकर कहा, इसे नहीं परन्तु हमारे लिये बरअब्बा को छोड़ दो; और बरअब्बा डाकू था।

### यीशु पर ज़ुल्म और क्रूस का दंड

**19** इस पर पिलातुस ने यीशु को लेकर कोड़े लगवाए।

2 और सिपाहियों ने कांटों का मुकुट गूंथकर यीशु के सिर पर रखा, और उसे बैजनी वस्त्र पहिनाया।

3 और यीशु के पास आ आकर कहने

लगे, हे यहूदियों के राजा, प्रणाम! और उसे थप्पड़ भी मारो।

4 तब पिलातुस ने फिर बाहर निकलकर लोगों से कहा, देखो, मैं उसे तुम्हारे पास फिर बाहर लाता हूँ; ताकि तुम जानो कि मैं उस में कुछ भी दोष नहीं पाता।

5 तब यीशु कांटों का ताज और बैजनी वस्त्र पहिने हुए बाहर निकले और पिलातुस ने उन से कहा, देखो यह व्यक्ति।

6 जब महापुरोहितों और सिपाहियों ने यीशु को देखा, तो चिल्लाकर कहा, कि उसे क्रूस पर चढ़ाओ, क्रूस पर: पिलातुस ने उन से कहा, तुम ही उसे लेकर क्रूस पर चढ़ाओ; क्योंकि मैं उस में दोष नहीं पाता हूँ।

7 यहूदियों ने उस को उत्तर दिया, कि हमारी कानून और व्यवस्था है और उस व्यवस्था के अनुसार वह मृत्युदंड के योग्य है क्योंकि उस ने अपने आप को परमेश्वर का पुत्र बनाया।

8 जब पिलातुस ने यह बात सुनी तो और भी डर गया।

9 और फिर किले के भीतर गया और यीशु से कहा, तुम कहां के हो? परन्तु यीशु ने उसे कुछ भी उत्तर न दिया।

10 पिलातुस ने यीशु से कहा, मुझे उत्तर क्यों नहीं देते? क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हें छोड़ देने का अधिकार मुझे है और तुम्हें क्रूस पर चढ़ाने का भी मुझे अधिकार है।

11 यीशु ने उत्तर दिया, कि यदि तुझे ऊपर से न दिया जाता, तो तुम्हारा मुझ पर कुछ अधिकार न होता; इसलिये जिस ने मुझे तुम्हारे हाथ पकड़वाया है, उसका पाप अधिक है।

12 इस से पिलातुस ने यीशु को छोड़ देना चाहा, परन्तु यहूदियों ने चिल्ला चिल्लाकर कहा, यदि तुम इस को छोड़ दोगे तो तुम्हारी भक्ति कैसर की ओर नहीं; जो कोई अपने आप को राजा बनाता है वह कैसर का साम्हना करता है।

13 ये बातें सुनकर पिलातुस यीशु को बाहर लाया और उस जगह एक चबूतरा था जो इब्रानी में गब्बता कहलाता है, और वहां न्याय-आसन पर बैठ गया।

14 यह फसह की तैयारी का दिन था और छठे घंटे के लगभग था: तब उस ने यहूदियों से कहा, देखो, यही है, तुम्हारा राजा!

### क्रूस पर चढ़ाओ

15 परन्तु वे चिल्लाए, कि ले जाओ! ले जाओ! उसे क्रूस पर चढ़ाओ; पिलातुस ने उन से कहा, क्या मैं तुम्हारे राजा को क्रूस पर चढ़ाऊँ? महापुरोहितों ने उत्तर दिया, कि कैसर को छोड़ हमारा और कोई राजा नहीं है।

16 तब उस ने यीशु को उन के हाथ सौंप दिया ताकि वह क्रूस पर चढ़ाया जाए।

17 तब वे यीशु को ले गये। और यीशु अपना क्रूस उठाए हुए उस स्थान तक बाहर गये, जो खोपड़ी का स्थान कहलाता है और इब्रानी में गुलगुता।

18 वहां उन्होंने ने यीशु को और उनके साथ दो मनुष्यों को क्रूस पर चढ़ाया, एक को इस तरफ, और एक को उस तरफ, और बीच में यीशु को।

### यहूदियों का राजा यीशु नासरी

19 और पिलातुस ने एक दोष-पत्र लिखकर क्रूस पर लगा दिया और उस में यह लिखा हुआ था, “यीशु नासरी, यहूदियों का राजा।”

20 यह दोष-पत्र बहुत यहूदियों ने पढ़ा क्योंकि वह स्थान जहां यीशु क्रूस पर चढ़ाये गये थे नगर के पास था और पत्र इब्रानी और लतीनी और यूनानी में लिखा हुआ था।

21 तब यहूदियों के महापुरोहितों ने पिलातुस से कहा, यहूदियों का राजा न लिखें परन्तु यह कि, “उस ने कहा, मैं यहूदियों का राजा हूँ”।

22 पिलातुस ने उत्तर दिया, कि मैं ने जो लिख दिया, वह लिख दिया।

### सिपाही यीशु के कपड़े लूटते हैं।

23 जब सिपाही यीशु को क्रूस पर चढ़ा चुके, तो उनके कपड़े लेकर चार भाग किए, हर सिपाही के लिये एक भाग, और कुरता भी लिया, परन्तु कुरता बिन सीअन ऊपर से नीचे तक बुना हुआ था : इसलिए उन्होंने ने आपस में कहा, हम इस को न फाड़ें, परन्तु इस पर चिट्ठी डालें कि वह किस का होगा।

24 यह इसलिये हुआ, कि पवित्रशास्त्र की बात पूरी हो कि उन्होंने ने मेरे कपड़े आपस में बांट लिए और मेरे वस्त्र पर चिट्ठी डाली : सो सिपाहियों ने ऐसा ही किया।

### माता की देखरेख

25 परन्तु यीशु के क्रूस के पास उनकी माता और उन की माता की बहिन मरियम, क्लोपास की पत्नी और मरियम मगदलीनी खड़ी थीं।

26 यीशु ने अपनी माता और उस शिष्य को जिस से वे प्रेम रखते थे, पास खड़े देखकर अपनी माता से कहा; हे नारी, देखो, यह आपका पुत्र है।

27 तब उस शिष्य से कहा, यह तुम्हारी माता हैं, और उसी समय से वह शिष्य, उन्हें अपने घर ले गया।

### यीशु की क्रूस पर मृत्यु

28 इस के बाद यीशु ने यह जानकर कि अब सब कुछ हो चुका; इसलिये कि पवित्रशास्त्र की बात पूरी हो कहा, मैं प्यासा हूं।

29 वहां एक सिरके से भरा हुआ बर्तन रखा था, सो उन्होंने ने सिरके में भिगोए हुए स्पंज को जूफे पर रखकर उनके मुंह से लगाया।

30 जब यीशु ने वह सिरका लिया, तो कहा, पूर्ण हुआ और सिर झुकाकर प्राण त्याग दिए।

31 और इसलिये कि वह तैयारी का दिन था, यहूदियों ने पिलातुस से निवेदन किया कि उन की टांगें तोड़ दी जाएं और वे उतारे जाएं ताकि सब्ब के दिन वे क्रूसों पर न रहें, क्योंकि

वह सब्ब का दिन बड़ा दिन था।

32 सो सिपाहियों ने आकर पहिले की टांगें तोड़ीं तब दूसरे की भी, जो यीशु के साथ क्रूसों पर चढ़ाए गये थे।

33 परन्तु जब यीशु के पास आकर देखा कि वे मर चुके हैं, तो उन की टांगें न तोड़ीं।

### यीशु का पंजर बेधा जाना

34 परन्तु सिपाहियों में से एक ने बरछे से उसका पंजर बेधा और उस में से तुरन्त लोहू और पानी निकला।

35 जिस ने यह देखा, उसी ने गवाही दी है, और उस की गवाही सच्ची है; और वह जानता है, कि सच कहता है ताकि तुम भी विश्वास करो।

36 ये बातें इसलिये हुई कि पवित्रशास्त्र की यह बात पूरी हो कि उस की कोई हड्डी तोड़ी न जाएगी।

37 फिर एक और स्थान पर यह लिखा है, कि जिसे उन्होंने ने बेधा है, उस पर दृष्टि करेंगे।

### यीशु का दफन किया जाना

38 इन बातों के बाद अरिमतियाह के यूसुफ ने, जो यीशु का शिष्य था, (परन्तु यहूदियों के डर से इस बात को छिपाए रखता था), पिलातुस से निवेदन किया, कि 'मैं यीशु की लोथ को ले जा सकूँ,' और पिलातुस ने उस की बात सुनी, और वह आकर यीशु की लोथ ले गया।

39 नीकुदेमुस भी जो पहिले यीशु के पास रात को गया था पचास सेर के लगभग मिला हुआ गन्धरस और एलवा ले आया।

40 तब उन्होंने ने यीशु की लोथ को लिया और यहूदियों के गाड़ने की रीति के अनुसार उसे सुगन्ध द्रव्य के साथ कफन में लपेटा।

41 उस स्थान पर जहां यीशु क्रूस पर चढ़ाये गये थे, एक बाग था; और उस बाग में एक नई कब्र थी; जिस में कभी कोई न रखा गया था।

42 सो यहूदियों की तैयारी के दिन के

कारण, उन्होंने ने यीशु को उसी में रखा, क्योंकि वह कब्र निकट थी।

### खाली कब्र यीशु का पुनर्जीवित होना

**20** सप्ताह के पहिले दिन मरियम मगदलीनी भोर को अंधेरा रहते ही कब्र पर आई, और पत्थर को कब्र से हटा हुआ देखा।

2 तब वह दौड़ी और शमौन पतरस और उस दूसरे शिष्य के पास जिस से यीशु प्रेम रखते थे आकर कहा, वे प्रभु को कब्र से निकाल ले गये हैं; और हम नहीं जानते, कि उन्हें कहां रख दिया है।

3 तब पतरस और वह दूसरा शिष्य निकलकर कब्र की ओर चले।

4 और दोनों साथ साथ दौड़ रहे थे, परन्तु दूसरा शिष्य पतरस से आगे बढ़कर कब्र पर पहिले पहुंचा।

5 और झुककर कपड़े पड़े देखे: तौभी वह भीतर न गया।

6 तब शमौन पतरस उसके पीछे पीछे पहुंचा और कब्र के भीतर गया और कपड़े पड़े देखे।

7 और वह अंगोछा जो उनके सिर से बन्धा हुआ था, कपड़ों के साथ पड़ा हुआ नहीं परन्तु अलग एक जगह लपेटा हुआ देखा।

8 तब दूसरा शिष्य भी जो कब्र पर पहिले पहुंचा था, भीतर गया और देखकर विश्वास किया।

### मरियम मागदलीनी का यीशु दर्शन

9 वे तो अब तक पवित्रशास्त्र की वह बात न समझते थे, कि यीशु को मरे हुए में से जी उठना होगा।

10 तब ये शिष्य अपने घर लौट गये।

11 परन्तु मरियम रोती हुई कब्र के पास ही बाहर खड़ी रही और रोते रोते कब्र की ओर झुककर,

12 दो स्वर्गदूतों को सफेद कपड़े पहिने हुए

एक को सिरहाने और दूसरे को पैताने बैठे देखा, जहां यीशु की लोथ रखी थी।

13 उन्होंने ने उस से कहा, हे नारी, तुम क्यों रोती हो? उस ने उन से कहा, वे मेरे प्रभु को उठा ले गये हैं और मैं नहीं जानती हूँ कि उन्हें कहां रखा है।

14 यह कहकर वह पीछे फिरी और यीशु को खड़े देखा और न पहिचाना कि वह यीशु हैं।

15 यीशु ने उस से कहा, हे नारी, तुम क्यों रोती हो? किस को ढूंढती हो? उस ने माली समझकर उस से कहा, हे महाराज, यदि तुम ने उन्हें उठा लिया है तो मुझ से कह दीजिये कि उन्हें कहां रखा है और मैं उन्हें ले जाऊंगी।

16 यीशु ने उस से कहा, मरियम! उस ने पीछे फिरकर उस से इब्रानी में कहा, रब्बूनी अर्थात् हे गुरु।

17 यीशु ने उस से कहा, मुझे मत छुओ क्योंकि मैं अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया हूँ परन्तु मेरे भाइयों के पास जाकर उन से कह दो, कि मैं अपने पिता, और तुम्हारे पिता, और अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जाता हूँ।

18 मरियम मगदलीनी ने जाकर शिष्यों को बताया, कि मैं ने प्रभु को देखा है और उन्होंने मुझ से ये बातें कही हैं।

### शिष्यों के मध्य यीशु का आना

19 उसी दिन जो सप्ताह का पहिला दिन था, सन्ध्या के समय जब द्वार जहां शिष्य थे, यहूदियों के डर के मारे बन्द थे, तब यीशु आये और बीच में खड़े होकर उन से कहा, तुम्हें शान्ति मिले।

20 और यह कहकर यीशु ने अपना हाथ और अपना पंजर उन को दिखाया : तब शिष्य प्रभु को देखकर आनन्दित हुए।

21 यीशु ने फिर उन से कहा, तुम्हें शान्ति मिले; जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूँ।

22 यह कहकर उस ने उन पर फूँका और उन से कहा, पवित्र आत्मा लो।

23 जिन के पाप तुम क्षमा करो वे उन के लिये क्षमा किये गये हैं जिन के तुम रखो, वे रखे गये हैं।

### थोमा का यीशु दर्शन

24 परन्तु बारहों में से एक शिष्य अर्थात् थोमा जो दिदुमुस कहलाता है, जब यीशु आये तो उनके साथ नहीं था।

25 जब और शिष्य उस से कहने लगे कि हम ने प्रभु को देखा है: तब उस ने उन से कहा, जब तक मैं उनके हाथों में कीलों के छेद न देख लूं, और कीलों के छेदों में अपनी उंगली न डाल लूं और उनके पंजर में अपना हाथ न डाल लूं, तब तक मैं विश्वास नहीं करूंगा।

26 आठ दिन के बाद यीशु के शिष्य फिर घर के भीतर थे, और थोमा उन के साथ था, और द्वार बन्द थे, तब यीशु ने आकर और बीच में खड़े होकर कहा, तुम्हें शान्ति मिले।

### अविश्वासी नहीं विश्वासी बनो

27 तब उस ने थोमा से कहा, अपनी उंगली यहां लाकर मेरे पंजर में डालो और अविश्वासी नहीं परन्तु विश्वासी बनो।

28 यह सुन थोमा ने उत्तर दिया, हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर!

29 यीशु ने उस से कहा, तुम ने तो मुझे देखकर विश्वास किया है, धन्य वे हैं जिन्होंने ने बिना देखे विश्वास किया है।

### पवित्र वचन का उद्देश्य

30 यीशु ने और भी बहुत से चिन्ह शिष्यों के साम्हने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गये हैं।

31 परन्तु ये इसलिये लिखे गये हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु ही परमेश्वर के पुत्र मसीह हैं: और विश्वास करके उनके नाम से जीवन पाओ।

### तिबिरियास झील पर मछली

#### पकड़ते शिष्य

**21** इन बातों के बाद यीशु ने अपने आप को तिबिरियास झील के किनारे शिष्यों पर प्रगट किया और इस रीति से वे प्रगट हुये।

2 शमौन पतरस और थोमा जो दिदुमुस कहलाता है, और गलील के काना नगर का नतनएल और जब्दी के पुत्र और उनके शिष्यों में से दो और जन इकट्ठे थे।

3 शमौन पतरस ने उन से कहा, मैं मछली पकड़ने को जाता हूं: उन्होंने ने उस से कहा, हम भी तुम्हारे साथ चलते हैं: तब वे निकलकर नाव पर चढ़े, परन्तु उस रात कुछ नहीं पकड़ा।

4 भोर होते ही यीशु किनारे पर आ खड़े हुये: तौभी शिष्यों ने नहीं पहिचाना कि वे यीशु हैं।

### यीशु का चमत्कार

5 तब यीशु ने उन से कहा, हे बालको, क्या तुम्हारे पास कुछ खाने को है? उन्होंने ने उत्तर दिया कि नहीं।

6 यीशु ने उन से कहा, नाव की दाहिनी ओर जाल डालो, तो पाओगे, तब उन्होंने ने जाल डाला, और अब मछलियों की बहुतायत के कारण उसे खींच न सके।

7 इसलिये उस शिष्य ने जिस से यीशु प्रेम रखते थे पतरस से कहा, ये तो प्रभु हैं: शमौन पतरस ने यह सुनकर कि प्रभु हैं, कमर में अंगरखा कस लिया, क्योंकि वह नंगा था, और झील में कूद पड़ा।

8 परन्तु और शिष्य डोंगी पर मछलियों से भरा हुआ जाल खींचते हुए आए, क्योंकि वे किनारे से अधिक दूर नहीं, कोई दो सौ हाथ पर थे।

### यीशु भोजन तैयार करते हैं

9 जब किनारे पर उतरे, तो उन्होंने ने

कोयले की आग, और उस पर मछली रखी हुई, और रोटी देखी।

10 यीशु ने उन से कहा, जो मछलियां तुम ने अभी पकड़ी हैं, उन में से कुछ लाओ।

11 शमौन पतरस ने डोंगी पर चढ़कर एक सौ तिरपन बड़ी मछलियों से भरा हुआ जाल किनारे पर खींचा, और इतनी मछलियां होने से भी जाल न फटा।

12 यीशु ने उन से कहा, कि आओ, भोजन करो और शिष्यों में से किसी को साहस न हुआ, कि उन से पूछें, कि वे कौन हैं? क्योंकि वे जानते थे, कि हो न हो ये प्रभु ही हैं।

13 यीशु आये, और रोटी लेकर उन्हें दी, और वैसे ही मछली भी।

14 यह तीसरी बार है, कि यीशु ने मरे हुए में से जी उठने के बाद शिष्यों को दर्शन दिया।

### **तीन बार पतरस से प्रश्न क्या तुम मुझ से प्रेम करते हो?**

15 भोजन करने के बाद यीशु ने शमौन पतरस से कहा, हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तुम इन से बढ़कर मुझ से प्रेम रखते हो? उस ने यीशु से कहा, हां, प्रभु आप तो जानते हैं, कि मैं आप से प्रेम रखता हूं: यीशु ने उस से कहा, मेरे मेमनों को चराओ।

16 यीशु ने फिर दूसरी बार उस से कहा, हे शमौन योहन्ना के पुत्र, क्या तुम मुझ से प्रेम रखते हो। उस ने यीशु से कहा, हां, प्रभु आप जानते हैं, कि मैं आप से प्रेम रखता हूं यीशु ने उस से कहा, मेरी भेड़ों की रखवाली करो।

17 यीशु ने तीसरी बार उस से कहा, हे शमौन, योहन्ना के पुत्र, क्या तुम मुझ से प्रेम रखते हो? पतरस उदास हुआ, कि यीशु ने उससे तीसरी बार ऐसा कहा; कि क्या तुम मुझ से प्रेम रखते हो? और यीशु से कहा, हे प्रभु, आप तो सब कुछ जानते हैं: आप यह

जानते हैं कि मैं आप से प्रेम रखता हूं: यीशु ने उस से कहा, मेरी भेड़ों को चराओ।

18 मैं तुझ से सच सच कहता हूं, जब तुम जवान थे, तो अपनी कमर बान्धकर जहां चाहते थे, वहां फिरते थे; परन्तु जब तुम वृद्ध होगे, तो अपने हाथ लम्बे करोगे, और दूसरा तुम्हारी कमर बान्धकर जहां तुम न चाहोगे वहां तुम्हें ले जाएगा।

19 यीशु ने इन बातों से संकेत दिया कि पतरस कैसी मृत्यु से परमेश्वर की महिमा करेगा; और यह कहकर, उस से कहा, मेरे पीछे हो लो।

20 पतरस ने फिरकर उस शिष्य को पीछे आते देखा, जिस से यीशु प्रेम रखते थे और जिस ने भोजन के समय उस की छाती की ओर झुककर पूछा था कि हे प्रभु, आपका पकड़वानेवाला कौन है?

21 उसे देखकर पतरस ने यीशु से कहा, हे प्रभु, इस का क्या हाल होगा?

22 यीशु ने उस से कहा, यदि मैं चाहूं कि वह मेरे आने तक ठहरा रहे, तो तुझे क्या? तुम मेरे पीछे चलो।

23 इसलिये भाइयों मैं यह बात फैल गयी, कि वह शिष्य न मरेगा; तौभी यीशु ने उस से यह नहीं कहा था कि यह न मरेगा, परन्तु यह कि यदि मैं चाहूं कि यह मेरे आने तक ठहरा रहे, तो तुझे इस से क्या?

### **योहन्ना की गवाही**

24 यह वही शिष्य है, जो इन बातों की गवाही देता है और जिस ने इन बातों को लिखा है और हम जानते हैं, कि उस की गवाही सच्ची है।

25 और भी बहुत से काम हैं, जो यीशु ने किये; यदि वे एक एक करके लिखे जाते, तो मैं समझता हूं, कि पुस्तकें जो लिखी जाती वो इस जगत में भी न समातीं।



# मोक्ष मुफ्त क्यों?

शिष्य थॉमसन

यतः पापस्य वेतनं मरणं  
किन्त्व अस्माकं प्रभुणा यीशु खीष्टे अनंत जीवनम्  
ईश्वर दत्तं दानम् आस्ते।  
( पाप की मजदूरी मृत्यु है किंतु हमारे प्रभु यीशु में 'मोक्ष' परम ईश्वर का वरदान है )  
( बाइबल: रोमि. 6:23 )

हर व्यक्ति मोक्ष की तलाश में है, वह ढूँढता है, दूर दूर यात्रा करता है, पहले तो ईश्वर को खोजा जाये, और फिर उससे मोक्ष मार्ग पूछें और उसे प्राप्त करें।

हर धर्म मोक्ष की आवश्यकता बताता है। मनुष्य के अंतःकरण की एक आवाज़ उसे एक आनेवाले कल से आगाह करती रहती है। मनुष्य संसार में आया है, और शरीर और संसार उसकी आखिरी मंजिल नहीं है आत्मा यहाँ से निकलकर आगे जायेगी, और मिट्टी के तत्वों से बना यह शरीर मिट्टी में मिल जायेगा, यह तो सभी जानते हैं। तो फिर मुक्ति, उद्धार, मोक्ष या स्वर्ग प्राप्ति तो हर व्यक्ति की ज़रूरत है। अग्निवास या अनंत नरक में आत्मा की पीड़ा को तो कोई नहीं चाहता है इसलिये कल से भयभीत होकर हर व्यक्ति मोक्ष की कीमत देने की कोशिश कर रहा है।

## 1. क्या हो कीमत

अपनी छोटी नज़र और अल्पबुद्धि का प्रयोग कर अधिकांश मनुष्य एक कीमत देने का विचार करते हैं। कष्टभोग करते हैं। कर्मदान चढ़ाते हैं। ज्ञान और दर्शन से खोजते हैं। धर्मस्थलों में भटकते हैं।

मोक्ष प्राप्ति के लिये कीमत पूछते हैं। और फिर अपने साधन या जेब टटोलते हैं। धनी मनुष्य अधिक धन देकर मोक्ष की संतुष्टि चाहता है। गरीब धन न होने पर कर्मदान व श्रमदान देने को तैयार होता है।

धर्म के व्यापारी मोक्ष का सौदा कराने में बिचवई का काम करते हैं। दुःखी, भयभीत, निराश, हताश मोक्षखोजी जाल में फँस जाते हैं। धन लुट

जाता है। श्रम थका देता है और एक झूठी सुरक्षा पाकर मनुष्य घर आ जाता है।

## 2. धन संपत्ति-दान से मोक्ष प्राप्ति नहीं:

क्या हम ईश्वर को कुछ दे सकते हैं? यह असंभव है। स्वर्गधाम और सर्वब्रह्मांड का बनाने वाला स्वयं ईश्वर है। जिसने सृष्टि बनाई है और मनुष्य की रचना भी की है। वह सर्व-सृष्टि का मालिक है। यदि हम कुछ उसे सृष्टि से निकाल कर कीमत के रूप में दें तो वह न दान है न दक्षिणा है, और न कीमत है। क्योंकि वह सब कुछ पहले से ही परम ईश्वर का है। हमारी धन संपत्ति हम ने ईश्वर से प्राप्त की है। तो हम क्या दान दें? हम क्या कीमत दें?

## 3. परमेश्वर के महान ब्रह्मांड में, मनुष्य की निर्बलता को तो देखें

इस ब्रह्मांड में हमारी पृथ्वी एक धूल के कण के समान है। हमारा सूर्य हमसे दस लाख गुना बड़ा है। हमारे सूर्य से लाखों गुना बड़े सूर्य और भी हैं जो नक्षत्र या सितारे कहलाते हैं। करोड़ों सूर्यों के झुंड को गैलेक्सी या आकाशगंगा कहते हैं। और इस तरह की करोड़ों गैलेक्सियाँ हम शक्तिशाली टेलिस्कोप से देख सकते हैं।

हमारी एक गैलेक्सी जिसका नाम 'मिल्की वे' है, उसके एक छोर से दूसरे छोर तक जाने के लिए 300,000 किलोमीटर प्रति सैकेंड जो प्रकाश की गति है, से 100,000 वर्ष लगेंगे, अंदाज़ लगाने के लिये इन करोड़ों गैलेक्सियों में से यदि आप दस गैलेक्सियों की यात्रा यदि 300,000 किलोमीटर प्रति सैकेंड से करेंगे तो कम से कम एक करोड़ वर्ष लगेंगे।

इस भीमकाय ब्रह्मांड को जिसे एक जीवित परम ईश्वर ने बनाया है, उसकी तुलना में हमारी अपनी पृथ्वी एक धूल के कण के समान है, और यदि इस तिनके को शक्तिशाली माइक्रोस्कोप से देखें तो इस तुलना में हम मनुष्य एक छोटे जीवाणु के समान शायद दिखाई देंगे।

और अब सवाल ये है, कि ये छोटा जीवाणु की तरह मनुष्य अपने घमंड और गर्व से इस असीमित सृष्टि के बनानेवाले कर्ता परम ईश्वर को अपने मोक्ष के लिये कुछ भौतिक वस्तु या धन, या प्रयास, या श्रम कीमत के रूप में देना चाहता है। इसको समझने के लिये एक उदाहरण लें, जैसे एक धनी राजा जिसके पास करोड़ों टन सोना और हीरे जवाहरात हैं। और इस राजा को एक अपराधी नागरिक एक रुपया दान कर खुश करना चाहता है, या अपने अधर्म की कीमत के रूप में देना चाहता है। कैसा है ये तर्क? क्या

इस रास्ते से मुक्ति की आशा है? आप मेरे साथ अवश्य सहमत होंगे, कि यह रास्ता मूर्खतापूर्ण है। और असंभव है।

प्रेम करनेवाला परम ईश्वर जीवित सृष्टिकर्ता है। उससे मिलन, पाप मोचन, संकट मोचन और आत्मा का मोक्ष कोई भौतिक वस्तु या दान-पुण्य या धन से नहीं खरीदा जा सकता है।

#### **4. कर्म-दान से मोक्ष प्राप्ति नहीं**

मात्र अच्छे कर्म से मोक्ष क्यों हासिल नहीं होता है? वो इसलिये कि पाप केवल कर्म ही से नहीं, पर हमारे विचारों और उद्देश्यों में बीज के रूप में छिपा हुआ हमारे मन और हृदय में बसा रहता है। हत्या पाप का बाहरी फल है, पर इसका छिपा हुआ बीज क्रोध है। जैसे बलात्कार पाप का बाहरी फल है पर इसके छिपे बीज कामुकता या वासना के गंदे विचार हृदय में हैं। चोरी पाप का बाहरी फल है, पर इसका बीज लालच के रूप में हृदय में है। तो परिणाम यह है, कि फल रूपी कर्मों के सुधार से या निवारण से, पाप का बीज छिपा हुआ जो हृदय और मन में है वह नहीं निकलता है। पापी विचार और उद्देश्य हमारे अंदर हमें पापी साबित करते रहते हैं।

इसलिये अच्छे कर्म करके अपनी कोशिश या गर्व से मोक्ष प्राप्त करना, एक गंदे बरतन का बस बाहर से साफ कर इस्तेमाल करना है, यह रास्ता संभव नहीं है। यह अंदर की बीमारी का बाहरी इलाज है।

ऊपर से तो हम अपने-अपने धर्म के चाहे वो कोई धर्म क्यों न हो, भक्त लगते हैं, अच्छे दिखते हैं, पर अंदर झूठ, अधर्म क्रोध और लालच से भरे हैं। यह हमारी बाहरी आँखों से तो हमें दिखाई नहीं देता है, पर परमेश्वर सब जानता है और देखता है।

#### **5. संसारिक गुरु और ज्ञान दर्शन से मोक्ष प्राप्ति नहीं**

बाइबल (यूहन्ना 3:13) में लिखा है “कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ा, बस केवल वही जो स्वर्ग से उतरा है (प्रभु यीशु)।”

यदि कोई सांसारिक मनुष्य अपने बुद्धि, ज्ञान, दर्शन, चमत्कार या तंत्रमंत्र से प्रभावित कर अपने पंथ में ले आये, तो इस मार्ग में न हमें पापमोचन मिलेगा न आत्मा का मोक्ष प्राप्त होगा। बस अंत मृत्यु और नरक लोक की अग्नि से मिलन होगा।

#### **6. मोक्ष मुफ्त है, स्वयं परम ईश्वर ने कीमत चुकाई है**

परमेश्वर मनुष्य देह धारण कर संसार में आये हैं, बाइबल में यीशु जो परम ईश्वर पुत्र बन संसार में उतर आते हैं जो हमें परमेश्वर के सत्य मार्ग,

ज्ञान और इच्छा को हम पर प्रगट करते हैं। मृत्यु के बलिदान के तीसरे दिन प्रभु यीशु पुनर्जीवित होते हैं। और चालीस दिन के बाद लोगों की भीड़ के देखते-देखते वे स्वर्ग की ओर चले जाते हैं। इस तरह प्रभु यीशु 'मार्ग, सत्य और जीवन' बन हमारे मोक्षदाता बनते हैं। बाइबल में लिखा है, कि आदि में सर्वसृष्टि स्वयं प्रभु यीशु ने अपने वचन की शक्ति से ही करी थी, वे स्वयं सर्वशक्तिमान परम ईश्वर हैं।

मोक्ष की कीमत बस ईश्वर ही अदा कर सकते हैं। वह इसलिये कि बस उन्हें ही मोक्ष की कीमत मालूम है। और यह कीमत है- एक पवित्र पावन बलिदान। पवित्र इसलिये क्योंकि परमेश्वर पवित्र है। इसी कारण 'प्रभु यीशु' एकमात्र सत्य अवतार बने, शरीर धारण करे और क्रूस की मृत्यु द्वारा पवित्र खून बहाये, सर्वसिद्ध बलिदान हुये। और ईश्वर के प्रेम द्वारा मनुष्य के मोक्ष की कीमत अदा होती है।

परम ईश्वर के हिसाब में मोक्ष की कीमत, और पाप का दण्ड बराबर है। और मनुष्य के बदले में यह कीमत या यह दण्ड परम ईश्वर स्वयं उठाते हैं।

अपनी मृत्युवश संतान को बचाने के लिये एक प्रेमी पिता अपना स्वयं प्राणदान करता है। मृत्यु की दवा जीवन है। मोक्ष की कीमत प्राणदान, बलिदान है। प्राणदान का कारण प्रेम है।

प्रेम ही मुक्तिमार्ग निकालता है। प्रेम ही मोक्ष की कीमत निर्धारित करता है। प्रेम ही मोक्ष का दाम है, और यह मुफ्त है, हमारा प्रयास नहीं है। परमेश्वर का वरदान है। आज प्रभु यीशु स्वर्गलोक में विराजमान हैं। और आपके मोक्षमार्ग बनकर पापमोचन कर आत्मा के ईशमिलन कराने को तैयार हैं।

बाइबल में लिखा है: परम ईश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया, कि अपने प्रिय ईष पुत्र यीशु को दान स्वरूप दिया। ताकि जो कोई उन पर विश्वास करे वे नरक के अग्निकुंड में नष्ट न हों, पर आत्मा का अनंत मोक्षदान प्राप्त करें (बाइबल यूहन्ना 3:16)

## 7. मोक्ष प्रार्थना

प्रभु यीशु, मैं पापी मनुष्य हूँ। मैं विश्वास करता हूँ कि आपने मेरे पापों की, और मोक्ष की कीमत अपने पवित्र खून से अदा की है। मेरे पापों को क्षमा करें। अपनी आत्मा के द्वारा नया जीवन दें। और मुझे मोक्ष प्रदान करें।